नवम्बर 2015

दादावाणी

कीमत ₹ 10

108 वाँ जन्मजयंती महोत्सव

संपादक : डिम्पल महेता
वर्ष : 11 अंक : 1
अखंड क्रमांक : 121
नवम्बर 2015

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Owned by
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Published at
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Total 32 pages including cover

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
१५ साल
भारत : ७५० रुपये
यू.एस.ए. : १५० डॉलर
यू.के. : १०० पाउन्ड
वार्षिक
भारत : १०० रुपये
यू.एस.ए. : १५ डॉलर
यू.के. : १० पाउन्ड
भारत में D.D. / M.O. 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

मुक्ति, ज्ञानी के माध्यम से

संपादकीय

मोक्ष प्राप्ति की इच्छा किसे नहीं होती? लेकिन मोक्ष की प्राप्ति कैसे होती है? प्रकट ज्ञानीपुरुष के माध्यम से....। चार वेद पूर्ण होने के बाद अंत में वेद इटसेल्फ (अपने आप) क्या कहते हैं? 'दिस इज़ नॉट देट।' तू जिस आत्मा को ढूँढ रहा है, वह इनमें नहीं है। वह अवर्णनीय है, अवक्तव्य है। वह शब्दों में नहीं होता। इसीलिए गो टू ज्ञानी। जो दुर्लभ हैं, ऐसे मोक्षदाता ज्ञानीपुरुष यदि मिल जाएँ तो मोक्ष अति-अति सुलभ हो जाता है। क्योंकि सिर पर जितने बाल हैं, उतने ही अन्य मार्ग हैं। उनमें से एक ही पगडंडी मोक्ष की है और उसे समर्थ ज्ञानीपुरुष ही बता सकते हैं। अनंत जन्मों से छूटने की भावना हुई है, लेकिन मार्ग दिखानेवाले ज्ञानीपुरुष होने चाहिए। जो छूटने का कामी है और जिसका बिना पोलवाला निश्चय है, उसे ज्ञानीपुरुष मिल ही जाते हैं।

वीतरागों ने कहा है, चाहे कितना भी उपादान तैयार होगा लेकिन ज्ञानीपुरुष के निमित्त के बगैर कार्य नहीं होगा। सिर्फ ज्ञानीपुरुष ही एक ऐसे संयोग हैं, मूल निमित्त हैं जो कि शुद्धात्मा का 'उपादान' करवाते हैं और अहंकार एवं ममता का, मैं और मेरा का 'अपादान' करवाते हैं। अर्थात् खुद का स्वरूप ग्रहण करवाते हैं और अहंकार एवं ममता का त्याग करवाते हैं। जैसे चोर की कृपा से चोर बन जाते हैं वैसे ही ज्ञानी की कृपा से ज्ञानी बन जाते हैं। ज्ञानी कृपा बरसाएँ और संज्ञा से समझाएँ, तभी आत्मा जागृत हो सकता है।

शक्कर मीठी है ऐसा तो सभी शास्त्रों में कहा है, लेकिन मीठा का मतलब क्या है? यह तो सिर्फ ज्ञानीपुरुष ही चखाते हैं, फिर वह ज्ञान क्रियाकारी हो जाता है। इस जगत् में किसी भी चीज़ द्वारा मुक्ति नहीं है, सिर्फ ज्ञानी के ज्ञान द्वारा ही मुक्ति है। जैसे सोने में तांबा (ताम्र), पीतल, चांदी वगैरह सभी धातुओं का मिश्रण हो गया हो तो उनके गुणधर्मों के आधार पर, कोई भी सुनार उन्हें अलग कर सकता है। उसी प्रकार जो आत्मा-अनात्मा के गुणधर्म को पूरी तरह से जानते हैं और जो अनंत-सिद्धिवाले हैं, ऐसे सर्वज्ञ ज्ञानी जिनमें भगवान प्रकट हो गए हों, चौदह लोक के नाथ प्रकट हो गए हों, वही आत्मा-अनात्मा का पृथक्करण करके अलग कर सकते हैं।

ऐसे ज्ञानीपुरुष को पहचानें कैसे? जगत् में जिन्हें कुछ जानना बाकी नहीं बचा, पुस्तकें पढ़ने की जरूरत नहीं है, माला फेरने की जरूरत नहीं है, वही ज्ञानीपुरुष हैं। जो खुद संपूर्ण मुक्त हो चुके हैं, तरणतारण हो चुके हैं। ज्ञानीपुरुष के पास सभी धर्मों को सार होता है। ज्ञानीपुरुष के ज्ञान से भेद दृष्टि मिल जाती है। यह सांसारिक दृष्टि और यह आत्म दृष्टि। उनका ज्ञान अपूर्व होता है, अलौकिक होता है।

कृष्ण भगवान ने कहा है कि ज्ञानीपुरुष अनंत काल के पापों को जलाकर भस्मीभूत कर देते हैं। साथ में दिव्यचक्षु देते हैं और स्वरूप का *लक्ष* बैठा देते हैं। फिर वह *लक्ष* कभी भी विस्मृत नहीं होता। इस कलियुग में, दूषमकाल में ग़ज़ब का आश्चर्यज्ञान प्रकट हुआ है। और ऐसे में हमें ज्ञानीपुरुष के माध्यम से आत्मा का अनुभव हो जाना, वही इस अक्रम ज्ञान की सिद्धि है। 'न भूतो, न भविष्यति' अक्रम मार्ग के ऐसे ज्ञानीपुरुष प्रकट हैं। पल मात्र का विकल्प किए बगैर वहाँ (उनके पास से) काम निकाल लेने जैसा है। जगत् के सभी लोगों की ज्ञानी से भेंट हो, आत्मज्ञान प्राप्त करके, मुक्ति को प्राप्त करें ऐसी भावना के साथ प्रस्तुत संकलन का आराधन करके कृतार्थ हो जाएँ।

- जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी चंदूभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

मुक्ति, ज्ञानी के माध्यम से

मोक्ष मार्ग की शुरुआत कहाँ से?

दादाश्री : आपको मोक्ष में जाना है क्या?

प्रश्नकर्ता : मोक्ष में जाने के विचार आते हैं, लेकिन मार्ग नहीं मिलता।

दादाश्री : जो विचारवान हो, वह तो *लक्ष* (जागृति) में रखता है कि यह संसार मार्ग आराधन करने जैसा है या आराधन करने जैसा नहीं है? आराधन करने जैसा नहीं हो तो 'ज्ञानीपुरुष' को ढूँढकर उन से मोक्षमार्ग प्राप्त कर ले। सिर के बाल जितने अन्य मार्ग हैं! उनमें एक ही पगडंडी है, जो मोक्ष की पगडंडी है! और उसे समर्थ 'ज्ञानीपुरुष' ही बता सकते हैं! मोक्षमार्ग ऑर्नामेन्टल (बाह्य दिखावेवाला) नहीं होता और बाकी के सभी मार्ग ऑर्नामेन्टल होते हैं।

मोक्ष में जाना हो तो इतना समझ लेना चाहिए कि 'मैं बंधा हुआ हूँ या नहीं?' फिर यह जानना चाहिए कि, बंधन किस आधार पर हुआ है? यह बंधन किससे टूटेगा?' उसके उपाय जान लेने चाहिए।

मूल मोक्षमार्ग को जानना चाहिए, मोक्षमार्ग के दाता की आवश्यकता है और वे तरणतारण होने चाहिए। खुद तर चुके होंगे तभी हमें तार सकेंगे, वर्ना खुद यदि डूब रहा होगा तो हमारा क्या भला करेगा? जो खुद दाता पुरुष होते हैं, वे तो मोक्ष का दान देने के लिए ही आए होते हैं, लेने के लिए नहीं आए होते! जो मोक्ष का दान देने आए हैं, ऐसे 'ज्ञानीपुरुष' के पास अपना काम होगा, मोक्षदाता पुरुष। जिनके पास स्टॉक में मोक्ष है और खुद मोक्ष स्वरूप हो चुके हैं।

मोक्ष मार्ग शुरू हो गया किसे (कब) कहते हैं? जो मोक्षस्वरूप हो गए हैं ऐसे 'ज्ञानीपुरुष' के पीछे (कदमों पर) चलने लगें, यानी मोक्षमार्ग शुरू हो गया। उनके पीछे चलने का तय करें कि देर-सवेर अब उनके पीछे ही चलना है यानी मोक्षमार्ग शुरू हो गया। उसकी मुक्ति अवश्य होगी!

लेकिन मोक्षदाता मिलने चाहिए

भगवान क्या कहते हैं? मोक्षमार्ग अति, अति, अति, सौ बार दुर्लभ, दुर्लभ, दुर्लभ है, लेकिन यदि ज्ञानीपुरुष मिल जाएँ तो खिचड़ी बनाने से भी अधिक सरल है!

खिचड़ी बनाने के लिए तो लकड़ी लानी पड़ती है,' दाल-चावल लाने पड़ते हैं, पतीली लानी पड़ती है, पानी लाना पड़ता है, तब जाकर खिचड़ी बनती है। जबकि मोक्ष तो खिचड़ी से भी आसान है लेकिन मोक्षदाता ज्ञानी मिलने चाहिए। वर्ना मोक्ष कभी नहीं हो सकता। करोड़ों जन्म बीत जाने पर भी नहीं हो सकता। अनंत जन्म हो ही चुके हैं न? 'ज्ञानीपुरुष' नहीं मिलें और मोक्ष मिल जाएगा, ऐसा मानना भूल है!

चतुर्गति के सारे मार्ग मेहनतवाले मार्ग हैं। जिसे अत्यंत मेहनत करनी पड़ती है वह नर्कगति में जाता है, उससे कम मेहनत करता है वह देवगति में जाता है, उससे कम मेहनत करता है वह तिर्यंच

में जाता है और बिल्कुल बिना मेहनतवाला मोक्ष का मार्ग है! 'ज्ञानीपुरुष' मिलने के बाद कहीं मेहनत करनी पड़ती होगी? ये दाल-चावल, रोटी मेहनत करके बना सकता है, लेकिन वह अपने आप आत्मदर्शन नहीं कर सकता। वह तो 'ज्ञानीपुरुष' करवाते हैं और हो जाता है। 'ज्ञानीपुरुष' मेहनत करवाएँ तब तो हम नहीं कह दें कि, 'मेरा खुद का ही फ्रेक्चर हो चुका है तो मैं मेहनत किस तरह कर सकूँगा?'

ऐसी भावना से छुड़वानेवाले मिलेंगे ही

हम यह स्पष्ट रूप से कहते हैं कि जितने भी मेहनत के मार्ग हैं, वे सभी संसारमार्ग हैं। मोक्ष की ही इच्छा करने योग्य है। मोक्ष का विचार यदि एक बार भी आया हो, तो लाख जन्म में ही सही, लेकिन ज्ञानीपुरुष मिल जाएँगे और तेरा मोक्ष हो जाएगा।

यह संसार छोड़ने से या धक्के मारने से छूटे ऐसा नहीं है, इसलिए ऐसी कोई भावना करो कि इस संसार से छूट सकें तो अच्छा। अनंत जन्मों से छूटने की भावना हुई है, लेकिन मार्ग का जानकार चाहिए या नहीं चाहिए? मार्ग दिखानेवाले 'ज्ञानीपुरुष' चाहिए।

प्रश्नकर्ता : इसमें से छूटने का कोई रास्ता?

दादाश्री : इस जंजाल में से छूटने का रास्ता यही है कि 'हम कौन हैं?' यदि यह ज्ञान प्राप्त हो जाए 'ज्ञानीपुरुष' से, तो छूट जाएँ ऐसा है।

इनसिन्सियर रहने से कुछ भी नहीं हो सकता

प्रश्नकर्ता : तो दादा, क्या सृष्टि में ऐसा कोई नियम है कि अगर किसी की भावना हो कि 'मुझे ज्ञानी को ढूँढना है', तो उसे मिल जाएँगे?

दादाश्री : मिलते हैं, अवश्य मिलते हैं। जो भावना करते हुए आया हो, उसे सब चीजें मिलती हैं लेकिन सच्ची भावना होनी चाहिए 'जो होगा वह चलेगा,' ऐसा नहीं होना चाहिए।

जिसे सिर्फ मोक्ष की ही पक्की इच्छा है, उसे कोई रोकनेवाला नहीं है! ज्ञानी उनके घर जाएँगे! वे कहेंगे कि, 'मुझे ज्ञानी का क्या करना है? मुझे उनसे मिलने तो जाना ही पड़ेगा न?' नहीं, तेरी इच्छा ही तेरे लिए ज्ञानी को ले आएगी! 'मोक्ष के अलावा अन्य कुछ भी नहीं चाहिए,' जिसकी सिर्फ यही एक इच्छा है, उसके पास हर एक चीज़ आती है, लेकिन जिसे दूसरी इच्छाएँ हैं, भीतर पोल है, उसका कुछ नहीं हो सकता। यदि किंचित्मात्र सांसारिक इच्छा नहीं करे तो ज्ञानी मिल ही जाते हैं।

'ज्ञानी' के अलावा हमें दूसरा कुछ भी नहीं चाहिए, वह भाव रखना है। 'इस जगत् की कोई भी विनाशी चीज़ मुझे नहीं चाहिए।' ऐसा पाँच बार सुबह में बोलकर उठना और उसे 'सिन्सियर' रहना है।

जिसे हृदयशुद्धिपूर्वक केवल 'चेतन' ही चाहिए, भौतिक सुख नहीं चाहिए, उसे 'ज्ञानीपुरुष' सामने से आ मिलते हैं और काम बन जाता है। सच्चे हृदय की बात की ज़रूरत है।

बुद्धिपूर्वक की नम्रता, बुद्धिपूर्वक की सरलता, बुद्धिपूर्वक की पवित्रता, ये सारे गुण हों तो मोक्ष के दरवाज़े के अंदर जा सकते हैं। जब इन सभी गुणों का संग्रह होता है, तब ज्ञानी मिलते हैं। इनके बगैर 'ज्ञानी' नहीं मिल सकते।

ज्ञानीपुरुष कौन?

लोगों को विषय और कषायों की पड़ी है! लेकिन जहाँ मंदविषयी और मंदकषायी हों, तभी ज्ञानीपुरुष को पहचान सकते हैं।

अगर यहाँ हीरे और काँच रखे हों, तो लोग समझ सकेंगे? ये हीरे हैं ऐसा कितने लोग पहचान सकेंगे?

प्रश्नकर्ता : बहुत कम लोग पहचान सकेंगे।

दादाश्री : पहचान नहीं सकेंगे न! सच्चे हीरे जैसे दिखनेवाले काँच के हीरे उनसे भी ज़्यादा सुंदर दिखते हैं, उन्हें ले लेते हैं और सच्चे हीरे को फेंक देते हैं, अर्थात् (सच्चा) पहचान लें तो काम बन जाए।

'ज्ञानीपुरुष' कौन? जिन्हें इस जगत् में कुछ भी जानना बाकी नहीं, बचा हो, पुस्तक पढ़ने की ज़रूरत नहीं होती, जिन्हें माला नहीं फिरानी होती! यदि वे खुद पुस्तक पढ़ते हों, माला फिराते हों तो हम नहीं समझ जाएँ कि यह तो अभी (किस) स्टेन्डर्ड (कक्षा) में हैं? अभी तो खुद भी पढ़ रहे हैं, तो हमारा क्या भला करेंगे? हम जब उन्हें कुछ पूछें, तब वे उलझन में पड़ जाते हैं, साहब क्या करते हैं? भीतर उलझन में होते हैं, फिर हमें शास्त्र के शब्द दिखाते हैं। अरे भाई, शास्त्र का क्या करना है? तू अंदर से बोल न! अंदर से मरा हुआ है या जीवित है? यदि भीतर जीवित है तो बोल भीतर से! लेकिन इन शास्त्रों को क्यों बीच में लाता है? शास्त्र तो बोर्ड हैं, स्टेशन पर उतरने के बोर्ड हैं, बोर्ड की क्या हर घड़ी ज़रूरत पड़ती है? उसकी तो कभी-कभी ज़रूरत पड़ती है। उतना ही जानने के लिए कि, 'भाई, कौन सा स्टेशन आया?' तो वह कहेगा कि, 'भाई, वह बोर्ड दिखा रहा है।' शास्त्र तो 'इटसेल्फ' कहते हैं, 'गो टु ज्ञानी।' (ज्ञानी के पास जा) वे निशानी दिखाते हैं। जो खुद संपूर्ण हो चुके हों, वे ही काम आते हैं।

मुक्ति का साधन, ज्ञानी

जो ज्ञान हितकारी नहीं होता, उसे कब तक सुनते रहना है? जब तक 'ज्ञानीपुरुष' नहीं मिलें तब तक। जब तक इंदौरी गेहूँ नहीं मिलें, तब तक राशन के गेहूँ मिलें तो वही खाने पड़ेंगे न? लेकिन यदि 'ज्ञानीपुरुष' का संयोग मिल जाए तब तो फिर आप माँगना भूल जाओगे, अध्यात्म में जो माँगो वह मिलेगा, क्योंकि 'ज्ञानीपुरुष' वे मोक्षदाता पुरुष हैं! खुद मुक्त हो चुके हैं। तरणतारण हो चुके हैं। वहाँ सभी चीज़ें मिलती हैं। मुझे आप मिले हो, इसलिए बात कर रहा हूँ आपसे। सर्व जंजालों में से मुक्त होने का यह साधन है।

क्या कभी इस जंजाल में से छूटने की इच्छा होती है? जंजाल पसंद ही नहीं है न? यह तो जंजाल में पड़े हुए हैं! जब तक नहीं छूट पाएँ, तब तक यह सब खाना-पीना, जैसा सब लोग करते हैं वैसा करते रहना है। लेकिन छूटने का मौका मिला है। ज्ञानीपुरुष मिले हैं तो छूट जाएँगे। इस जंजाल में से छूट जाएँ तो परमानंद, मुक्ति!

शास्त्रों में है धर्म, मर्म नही

प्रश्नकर्ता : धार्मिक पुस्तकें जंजाल में से मुक्त होने के लिए ही लिखी गई हैं न?

दादाश्री : हाँ, लेकिन धार्मिक पुस्तकें कहीं भी जंजाल में से मुक्त होने का बताती ही नहीं। वे तो धर्म करने के लिए हैं। उससे जगत् पर अधर्म नहीं चढ़ बैठता। इसलिए ऐसा कुछ अच्छा सिखाते हैं। उससे सांसारिक सुख मिलते हैं, अड़चनें नहीं आती, खाने-पीने को मिलता है, लक्ष्मी मिलती है, इसलिए धर्म सिखाते रहते हैं।

धर्म तो बहुत मिल जाते हैं, लेकिन ज्ञानी नहीं मिलते! और तब तक छुटकारा प्राप्त नहीं होता, भटकते रहना है तब तक।

'ज्ञानीपुरुष' के पास सभी धर्मों का सार होता है। शास्त्रों में धर्म है, मर्म नहीं है। मर्म 'ज्ञानी' के हृदय में है। अनियमवाला संसार मार्ग वह अशुभ मार्ग है, नियमवाला संसार मार्ग वह शुभ मार्ग और जो नियम से भी परे है, वह ज्ञानियों का मार्ग अर्थात् मोक्ष मार्ग।

वीतराग विज्ञान के अलावा अन्य किसी साधन से मोक्ष नहीं है। अन्य साधनों से बंधन है, उनसे सिर्फ दिन गुज़रते हैं, 'ज्ञानीपुरुष' से सत् साधन प्राप्त होते हैं। 'ज्ञानी,' वे तो साधन स्वरूप हैं। 'विज्ञान स्वरूप आत्मा' साध्य है। शास्त्रों में साधन ज्ञान है, साध्य ज्ञान नहीं है। साध्य ज्ञान 'ज्ञानी' के पास है। साध्य ज्ञान, जो कि 'आत्मा' है, वह 'ज्ञानी' की कृपा से प्राप्त हो सके ऐसा है।

जब तक साध्य वस्तु (आत्मा) नहीं मिले, तब तक (आप्तप्राप्ति प्राप्ति के) साधनों में रहना चाहिए। लेकिन यदि 'ज्ञानीपुरुष' मिल जाएँ तो कुछ भी करने की ज़रूरत नहीं है। 'ज्ञानीपुरुष' खुद ही सबकुछ कर देते हैं और वे नहीं मिले हों, तो आपको कुछ न कुछ करना ही चाहिए। नहीं तो उल्टी चीज़ें घुस जाएँगी।

ज्ञानी द्वारा बताए उपाय से छूट जाना है

'ज्ञानीपुरुष' मिल जाएँ तो उन्हें कहना कि, साहब, मेरा निबेड़ा ले आइए। तब 'ज्ञानीपुरुष' एक घंटे में ही सब कर देते हैं।

'ज्ञानीपुरुष' मोक्ष का मार्ग दिखाते हैं और रास्ते पर ला देते हैं। इसीलिए वे कहें उस रास्ते पर चलकर छूट जाना है। और आपको लगता है कि 'हम इस *उपाधी* (बाहर से आनेवाला दु:ख) में से छूट गए!' सर्वस्व *उपाधी* में यदि समाधि का अनुभव हो, तो समझना कि मुझे 'ज्ञानीपुरुष' मिले थे!

भेद, शास्त्रज्ञानी और ज्ञानीपुरुष में?

शास्त्र क्या है? शब्दरूपी है। जब से शब्दों से आत्मा जानने लगें तब से फायदा होने की शुरुआत होती है। वे जो शब्द हैं, उनके अर्थ खुलते-खुलते शब्दार्थ तक पहुँचते हैं। फिर आगे का अर्थ खुलते-खुलते परमार्थ तक पहुँचते हैं। दृष्टि वहाँ तक पहुँच जाती है। पंडित अर्थात् जो शास्त्रों का सूक्ष्म से सूक्ष्म अर्थघटन कर सकें और शास्त्रज्ञानी अर्थात् जो शास्त्रों का सार निकाल सकें! लेकिन शास्त्रों से दृष्टि नहीं बदल सकती। दृष्टि बदलने के लिए तो ज्ञानीपुरुष की आवश्यकता है। 'इस' (मिथ्या) दृष्टि के कारण ही संसार खड़ा हो गया है।

प्रश्नकर्ता : ज्ञानीपुरुष और शास्त्रज्ञानी में क्या अंतर है?

दादाश्री : 'यह जगत् क्या है, कौन चला रहा है, कैसे चल रहा है, हम कौन हैं, ये सब क्या है' इन सभी को जानते हों, जिन्हें कुछ भी जानना बाकी नहीं हो, उन्हें ज्ञानीपुरुष कहते हैं। सिर्फ शास्त्रज्ञान जानते हों और आत्मा नहीं जानते हों उन्हें ज्ञानी नहीं कह सकते। जो शास्त्रों के शब्द कहते हैं उन्हें शास्त्रज्ञानी कहते हैं। शास्त्रज्ञानी को शब्दज्ञानी कहते हैं, वे अनुभव ज्ञानी नहीं होते और वे (ज्ञानी) तो शास्त्रज्ञान से ऊपर का जानते हैं।

अर्थात् दो प्रकार के ज्ञानी हैं - एक शास्त्र के ज्ञानी कहलाते हैं। उन्हें शास्त्रों का पूरा ज्ञान होता है लेकिन आत्मा का ज्ञान नहीं होता। आत्मा को शब्द से जानते हैं, अनुभव से नहीं जानते, समकित से नहीं जानते। और ज्ञानीपुरुष, उनका ज्ञान तो विज्ञानमय होता है, वह ज्ञान क्रियाकारी होता है, वह ज्ञान ही काम करता रहता है। जबकि शास्त्रों का ज्ञान क्रियाकारी नहीं होता।

हजारों सालों में एकाध ज्ञानीपुरुष जन्म लेते हैं, बाकी संत और शास्त्रज्ञानी तो बहुत होते हैं। जो आत्मा के ज्ञानी होते हैं न, वे तो परमसुखी होते हैं। उन्हें किंचित्मात्र दु:ख नहीं रहता, इसीलिए वहाँ हमारा कल्याण हो जाता है। जो खुद अपना कल्याण करके बैठे हों वही हमारा कल्याण कर सकते हैं।

शास्त्रज्ञानियों का तो अगर ज़रा सा भी अपमान किया तो वे गुस्सा हो जाएँगे। अरे! तेरा ज्ञान कहाँ गया? लेकिन वह तो शास्त्रज्ञान है। यानी पुस्तक के

बैंगन! पुस्तक के बैंगन और बाज़ार के बैंगन में फर्क नहीं है क्या? अर्थात् सच्चा ज्ञान होना चाहिए। ज्ञानीपुरुष का ज्ञान अपूर्व होता है, अलौकिक ज्ञान होता है। पहले कभी सुना नहीं हो, पढ़ा नहीं हो, जाना नहीं हो ऐसा, बिल्कुल डिफरेन्सवाला (अलग प्रकार का) ज्ञान होता है।

शास्त्रज्ञानी मतलब वे इतना जानते हैं कि पानी गरम करके फिर चाय पत्ती डालकर, थोड़ी सी शक्कर डालकर दूध डाल देना है, तो चाय बन जाएगी। लेकिन जब चाय बनाते हैं तब अलग ही तरह की बना देते हैं। अब अगर चाय बनाने में इतनी गलतियाँ होती हैं, तो आत्मा के बारे में कितनी बड़ी गलती करते होंगे? ये सारे शास्त्रज्ञानी अर्थात् थ्योरिटिकल (तात्विक)! लेकिन प्रेक्टिकल (वास्तविक) के बिना यह काम का नहीं है। लोग कहते हैं न कि पढ़ाई कर ली लेकिन उस ज्ञान का उपयोग नहीं किया? यानी पढ़ाई के साथ उस ज्ञान का उपयोग भी करना चाहिए। यानी पढ़ाई तो बहुत कर लेते हैं लेकिन उसको उपयोग में भी लाना पड़ेगा न?

भेददृष्टि मिल सकती है, सिर्फ ज्ञानी के माध्यम से...

शास्त्रज्ञानी को कभी भी आत्मा प्राप्त नहीं हो सकता क्योंकि आत्मा तरफ की सही दृष्टि उन्हें कौन दिखाएगा। सही दिखाने के बाद ही उस तरफ जाएँगे न? लाख शास्त्रों को पढ़ लें लेकिन शास्त्रों से दृष्टि नहीं बदलेगी।

प्रश्नकर्ता : इस दृष्टि को बदलने की शुरुआत किस तरह से हो सकती है?

दादाश्री : दृष्टि बदलने की शुरुआत तो, जब 'ज्ञानीपुरुष' मिल जाएँ और उनके पास सत्संग सुनने आओ तो आपकी दृष्टि धीरे-धीरे बदल जाएगी। अभी आप सुन रहे हो, तो थोड़ी-थोड़ी आपकी दृष्टि बदल रही है। ऐसे करते-करते थोड़ा परिचय हो जाए, एकाध महीने, दो महीनों का, तो दृष्टि बदलेगी। नहीं तो फिर 'ज्ञानीपुरुष' से कहो, 'साहब, मेरी दृष्टि बदल दीजिए,' तो एक दिन में, एक घंटे में ही बदल देंगे।

दृष्टि बदले बगैर 'मूल-वस्तु' प्राप्त नहीं हो सकती। दृष्टि कब बदलती है? जब 'ज्ञानीपुरुष' खुद हाज़िर हों तब। दृष्टि द्रष्टा में कब पड़ती है? स्वरूप को समझने पर ही (पहचानें तब)। 'ज्ञानीपुरुष' स्वरूप की पहचान करवा देते हैं।

मोक्ष अर्थात् क्या? दृष्टि भेद होना चाहिए। सिर्फ 'ज्ञानीपुरुष' यह दृष्टि भेद करवा देते हैं। 'यह संसार दृष्टि और यह आत्म दृष्टि' ऐसा दृष्टि भेद करवा देते हैं। बाकी, दृष्टि कभी भी अपने आप नहीं बदल सकती। विकल्पी की दृष्टि कभी भी निर्विकल्पी नहीं हो सकती।

मोक्ष क्या है?

प्रश्नकर्ता : मोक्ष, वह आशा की निष्पत्ति (उत्पत्ति, आर्विभाव) है, ऐसा कह सकते हैं?

दादाश्री : नहीं, मोक्ष तो खुद का स्वभाव ही है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर ज़्यादातर लोगों ने बार-बार मोक्ष की प्राप्ति के ही रास्ते क्यों बताए?

दादाश्री : वास्तव में ऐसा है, कि वे अपनी भाषा का मोक्ष बताते हैं।

मोक्ष अर्थात् 'मुक्तभाव', सभी सांसारिक दुःखों से मुक्ति। मेहनत तो संसार के लिए की जाती है, मोक्ष के लिए नहीं। आत्मा का स्वभाव ही मोक्ष स्वरूप है। जैसे पानी का स्वभाव ठंडा है। उसे गरम करने में मेहनत करनी पड़ती है, लेकिन क्या ठंडा करने में मेहनत करनी पड़ती है? नहीं करनी पड़ती। वह तो अपने आप ही, उसके स्वभाव से ही ठंडा

होता जाएगा। लेकिन यह बात समझ में कैसे आए? खुद का स्वभाव ही मोक्ष स्वरूप है, इसे नहीं समझने का कारण यही है कि बड़ी ज़बरदस्त भ्रांति बरतती है। वह भ्रांति किसी काल में जाए ऐसी नहीं है।

ज्ञानी के पीछे-पीछे चले जाना

प्रश्नकर्ता : वह भ्रांति किस तरह जाएँ?

दादाश्री : वह तो अगर ज्ञानीपुरुष की भेंट हो तो हल आ जाता है। इसलिए ज्ञानीपुरुष को खोजना, सजीवन मूर्ति को खोजना!

जो खुद छूट चुके हैं, उन्हें खोजना। खुद तर चुके हैं और अनेकों को तारने का सामर्थ्य जिनमें हैं, ऐसे तरणतारण ज्ञानीपुरुष को खोजना और निर्भय होकर उनके पीछे-पीछे चले जाना।

वीतरागों ने कहा है कि, ''मोक्ष के लिए कुछ भी करने जैसा नहीं है, मात्र 'ज्ञानी' के पीछे-पीछे चले जाना। उनका हाथ मत छोड़ना।''

यह सारा संसार गोल-गोल है। उसका अंत आए ऐसा है ही नहीं। अत: बात का अंत खोजने के लिए 'ज्ञानीपुरुष' से पूछना चाहिए कि 'अब हमें कब तक भटकना है? हम तो कोल्हू के बैल की तरह चक्कर काट रहे हैं!' 'मेरा हल ला दीजिए!'

बाकी मोक्ष के लिए क्या जानने की ज़रूरत है? ज्ञानी के पास आकर खुद का आत्मा जान लेंगे, तो मोक्ष हो जाएगा, बस। अगर ज्ञानी के पास जाकर उनसे कहें कि 'साहब मेरा मोक्ष कर दीजिए,' तो वे कर देंगे।

जो छूट चुका है, वही छुड़वा सकता है

यहाँ आपकी आँखों पर पट्टी बाँधकर खम्भे के साथ रस्सी से ज़ोर से बाँध दिया हो, फिर छाती के आगेवाली रस्सी की एक लपेट मैं ब्लेड से काट डालूँ, तो आपको अंदर पता चल जाएगा न? यहाँ से रस्सी छूट गई, ऐसा आपको खुद को अनुभव होगा। एक बार वह समझ जाए कि मैं मुक्त हो गया, तो काम हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : अब उसका उपाय आप बताइए कि क्या है?

दादाश्री : उपाय में तो 'ज्ञानीपुरुष' से माँग लेना कि 'साहब, मेरी मुक्ति कीजिए।' आप तो कुछ बोलते ही नहीं न? आपको मुक्ति की इच्छा ही नहीं है न! माँग तो करनी पड़ेगी न? हम जौहरी की दुकान में गए हों और सिर्फ देखते रहें और बोले नहीं, तब तक व्यापारी को किस तरह पता चलेगा कि आपको क्या चाहिए? इसलिए मोक्ष, दिव्यचक्षु जो कुछ चाहिए, उन सब का टेन्डर भरकर लाना। हम एक घंटे में ही सबकुछ दे देंगे।

तो आप एक दिन मेरे पास आना। हम एक दिन तय करेंगे तब आना है। उस दिन सभी की रस्सी पीछे से काट देते हैं। रोज़ तो सत्संग की सभी बातें करते हैं, लेकिन एक दिन तय करें, उस दिन ब्लेड से ऐसे बंधन काट देते हैं। अन्य कुछ नहीं। फिर तुरंत ही आप समझ जाएँगे कि यह सब खुल गया। सीने पर से बंधन गया, ऐसा अनुभव होने पर तुरंत ही कहोगे कि मुक्त हो गया। अर्थात् मुक्त हो गया हूँ, ऐसा (खुद को) भान होना चाहिए। मुक्त होना, यह कोई गप नहीं है। यानी हम आपको मुक्त करवा देते हैं।

जो खुद बंधन मुक्त हो चुके हों, वे हमें मुक्त कर सकते हैं। और फिर कलियुग के मनुष्यों में इतनी शक्ति नहीं है कि अपने आप कर सकें। ये कलियुग के मनुष्य तो कैसे हैं? ये तो फिसलते-फिसलते आए हैं, फिसल गए इसलिए अब उनसे अपने आप चढ़ा जा सके, ऐसा है ही नहीं, इसलिए 'ज्ञानीपुरुष' की हेल्प (मदद) लेनी पड़ेगी।

ज्ञानी से ही आत्मप्राप्ति

प्रश्नकर्ता : खुद के आत्मा का खुद साक्षात्कार कर सकता है न?

दादाश्री : नहीं। 'ज्ञानीपुरुष' के बिना साक्षात्कार नहीं हो सकता, किसी को भी नहीं हुआ है। जो मुक्त हैं, वे ही छुड़वा सकते हैं । वही इस जंजाल में बंधा हुआ है, तो फिर हमें किस तरह से छुड़वा सकेगा? अत: तरणतारण पुरुष की आवश्यकता है।

बाकी, यह खुद से हो सके ऐसा नहीं है। अगर खुद से हो सकता तो ये साधु-संन्यासी सभी करके बैठ चुके होते। लेकिन वहाँ तो 'ज्ञानीपुरुष' का ही काम है। 'ज्ञानीपुरुष' इसके निमित्त हैं।

प्रश्नकर्ता : आत्मा को पहचानने के लिए निमित्त की आवश्यकता है?

दादाश्री : निमित्त के बगैर तो कुछ नहीं हो सकता।

पुण्यानुबंधी पुण्य से ज्ञानी का मिलाप

प्रश्नकर्ता : निमित्त पुण्य से मिलता है या पुरुषार्थ से?

दादाश्री : पुण्य से। बाकी, पुरुषार्थ करे और इस उपाश्रय (धर्मस्थान) से उस उपाश्रय दौड़ता फिरे, ऐसे अनंत जन्मों तक भटकता रहे तो भी निमित्त प्राप्त नहीं होगा और अपना पुण्य हो तो रास्ते में मिल जाएँगे। उसके लिए पुण्यानुबंधी पुण्य चाहिए।

हठ से किए गए सारे काम, हठाग्रही तप, हठाग्रही क्रिया, उनसे पापानुबंधी पुण्य बंधता है। जबकि समझकर किया हुआ तप, क्रियाएँ, अपने आत्मकल्याण हेतु के लिए किए गए कर्मों से पुण्यानुबंधी पुण्य बंधता है और किसी काल में ज्ञानीपुरुष मिल जाते हैं और मोक्ष में चला जाता है। पुण्यानुबंधी पुण्य 'ज्ञानीपुरुष' से मिलाप करवा देता है!

प्रश्नकर्ता : जिस प्रकार पाप से संसार बढ़ता है, उसी प्रकार पुण्य से भी संसार बढ़ता है न?

दादाश्री : पुण्य से भी संसार तो बढ़ता है, यहाँ से जो मोक्ष में गए हैं न, वे सब ज़बरदस्त पुण्यशाली थे। उनके आसपास दौ-सौ पाँच-सौ तो रानियाँ होती थीं और बहुत बड़ा राज्य होता था। खुद को पता भी नहीं होता था कि कब सूर्यनारायण उदय हुए और कब अस्त हो गए। पुण्यशाली का जन्म तो ऐसे ठाठ-बाठ में होता है! ठाठ-बाठ होते हैं फिर भी वे उकता जाते हैं कि इस संसार में क्या सुख है भला? पाँच-सौ रानियों में से पचास रानियाँ उन पर खुश रहती थीं, बाकी की मुँह चढ़ाकर घूमती रहती थीं। कुछ तो राजा को मरवाना चाहती थीं। अर्थात् यह जगत् तो अत्यंत कठिनाईयोंवाला है। इसमें से पार निकलना बहुत मुश्किल है। 'ज्ञानीपुरुष' मिल जाएँ तो सिर्फ वे ही छुटकारा दिलवा सकते हैं, वर्ना कोई भी छुटकारा नहीं दिलवा सकता।

महत्व निमित्त का ही

प्रश्नकर्ता : क्या उपादान की योग्यता के बिना, पात्रता के बिना निमित्त उपकार कर सकता है? यदि कर सकता है तो कितना और किस प्रकार से?

दादाश्री : क्रमिकमार्ग में उपादान की योग्यता के बिना निमित्त उपकार नहीं कर सकता। ये अक्रमज्ञानी किसी का भी काम कर सकते हैं। उनसे मिला, वही उसकी पात्रता। यह तो 'अक्रम विज्ञान' है, घंटेभर में ही मुक्ति दे, ऐसा यह विज्ञान है! जो करोड़ों जन्मों तक नहीं हो सके, वह घंटेभर में ही हो जाता है! तुरंत फल देनेवाला है। क्रमिक अर्थात्

क्या कि 'स्टेप बाय स्टेप'। सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़ना, परिग्रह छोड़ते-छोड़ते ऊँचे चढ़ना।

प्रश्नकर्ता : खुद का आत्मा वह नहीं कर सकता?

दादाश्री : खुद का आत्मा यदि कर सकता तो अभी तक भटकना ही नहीं पड़ता न? निमित्त के बिना कभी भी ठिकाना नहीं पड़ता। खुद का आत्मा (अपने आप) कुछ नहीं कर सकता। जो बंधा हुआ है, वह स्वयं किस तरह छूट सकता है?

प्रश्नकर्ता : दूसरी एक ऐसी भी मान्यता है कि 'निमित्त की आवश्यकता तो स्वीकार्य है ही, लेकिन निमित्त कुछ कर नहीं सकता न!'

दादाश्री : निमित्त कुछ कर नहीं सकता ऐसा यदि कभी हो न, तो फिर कुछ ढूँढने को रहा ही नहीं न! पुस्तक पढ़ने की ज़रूरत क्या रही? मंदिर जाने की ज़रूरत ही कहाँ रही? कोई अक्लवाला कहेगा न, कि 'साहब, तब फिर यहाँ किसलिए बैठे हो? आपका हमें क्या काम है? पुस्तकें किसलिए छपवाई हैं? यह मंदिर क्यों बनवाया है? क्योंकि निमित्त कुछ कर ही नहीं सकता न!' ऐसा कहनेवाला कोई निकलेगा या नहीं निकलेगा?

अंधा व्यक्ति ऐसा कहे कि 'मैं अपनी आँखें खुद बनाऊँगा, और देखूँगा, तभी सही है।' तब हम हँसते हैं या नहीं हँसते? ऐसी बातें करते हैं। स्कूल में एक प्रोफेसर हैं। उन्हें बच्चों की ज़रूरत है, लेकिन क्या बच्चों को प्रोफेसर की ज़रूरत नहीं है? एक नया 'मेनिया' (पागलपन) चला है! जो निमित्त कहलाते हैं, ज्ञानीपुरुष या गुरु, उन्हें हटा देते हैं!

प्रश्नकर्ता : ज्ञान गुरु से मिलता है, लेकिन जिस गुरु ने खुद आत्म साक्षात्कार कर लिया हो, उनके ही हाथों ज्ञान मिल सकता है न?

दादाश्री : वे 'ज्ञानीपुरुष' होने चाहिए और फिर सिर्फ आत्म साक्षात्कार करवाने से कुछ नहीं होगा। 'ज्ञानीपुरुष' तो 'यह जगत् किस तरह से चल रहा है? खुद कौन है? यह कौन है?' ऐसे सभी स्पष्टीकरण दें तब काम पूरा हो, ऐसा है।

नहीं चूकना उपकारी भाव

'ज्ञानीपुरुष' निमित्त हैं और आपका उपादान है। उपादान चाहे जितना भी तैयार हो, लेकिन 'ज्ञानीपुरुष' के निमित्त के बिना कार्य नहीं हो पाएगा। क्योंकि यह आध्यात्मिक विद्या, यही एक कार्य ऐसा है जो निमित्त के बिना प्रकट नहीं हो सकता।

हम तो खुद ही आपसे कहते हैं न, कि हम तो निमित्त हैं। मात्र निमित्त! लेकिन यदि आप निमित्त मानोगे तो आपका नुकसान होगा, क्योंकि उपकारी भाव चला जाएगा। जितना उपकारी भाव, उतना ही अधिक परिणाम प्राप्त होगा। उपकारी भाव को 'भक्ति' कहा है।

प्रश्नकर्ता : आपको निमित्त मानें, तो उपकारी भाव चला जाएगा, वह समझ में नहीं आया।

दादाश्री : यदि आपने निमित्त माना तो आपको लाभ नहीं मिलेगा। आप उपकार मानोगे तो परिणमित होगा। ऐसे नियम हैं इस दुनिया के। लेकिन ये निमित्त ऐसे हैं कि मोक्ष ले जानेवाले निमित्त हैं। इसलिए महान उपकार मानना। वहाँ अर्पण करने को कहा है। सिर्फ उपकार ही नहीं मानना है, लेकिन सारा मन-वचन-काया अर्पण कर देना। सर्वस्व अर्पण करने में देर ही नहीं लगे ऐसा भाव आ जाना चाहिए।

वीतरागों ने भी कहा है कि ज्ञानीपुरुष तो ऐसा कहते हैं कि 'मैं तो निमित्त हूँ', लेकिन मुमुक्षु को 'वे निमित्त हैं' ऐसा नहीं मानना चाहिए। मुमुक्षुओं को 'वे ही हमारा सर्वस्व हैं', ऐसा कहना चाहिए,

नहीं तो 'व्यवहार चूक गए' कहा जाएगा। आपको तो, 'वही मोक्ष में ले जानेवाले हैं', ऐसे कहना है। इस तरह का दोनों का व्यवहार कहलाता है।

अर्थात् वस्तुस्थिति में यह इतना सरल मार्ग है, समभावी है, कोई *उपाधी* रूप नहीं है और फिर मार्ग दिखानेवाले और कृपा करनेवाले खुद क्या कहते हैं? कि 'मैं निमित्त हूँ'। देखो (खुद) सिर पर पगड़ी नहीं पहनते न? नहीं तो कितनी बड़ी पगड़ी पहनकर घूमते रहते? यानी हम देनेवाले भी नहीं हैं, निमित्त हैं।

ज्ञान दाता, लेकिन खुद कर्ता नहीं

डॉक्टर के पास जाएँ, तो रोग कुछ मिटेगा और बढ़ई के वहाँ जाएँगे तो रोग मिटेगा?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : इसलिए जिस-जिस चीज़ के निमित्त हैं, वहाँ जाएँ तब अपना काम होगा। इसलिए क्रोध-मान-माया-लोभ दूर करने हों, यह सारा अज्ञान दूर करना हो, तो ज्ञानी के पास जाना पड़ेगा।

एक व्यक्ति आम की आशा रखकर पेड़ के नीचे बैठ गया। भगवान ने पूछा, 'अरे, तू पेड़ के नीचे क्यों बैठा है?' तब वह कहने लगा, 'आम खाने।' भगवान ने कहा, 'अरे, यह तो बरगद का पेड़ है न! उससे आम की आशा रखकर बैठने से तुझे क्या मिलेगा? अरे, पेड़ को तो पहचान! पेड़ को पहचानकर तू फल की आशा रख।' ऐसे ही 'ज्ञानीपुरुष' के पास जा, तो तेरा हल आएगा।

श्रीमद् राजचंद्र ने भी कहा है कि ज्ञान, ज्ञानी के पास है और उनके बिना आपका छुटकारा कभी भी नहीं हो सकता। इसलिए 'ज्ञानी' की ही इसमें ज़रूरत है। चौबीस तीर्थंकर कहते आए हैं कि 'आत्मज्ञान के लिए निमित्त की ज़रूरत है।' 'ज्ञानी' कर्त्ता नहीं होते। मैं यदि कर्त्ता होऊँ, तो मुझे कर्म बंधेंगे और आप निमित्त मानो तो आपको पूरा-पूरा लाभ नहीं होगा। मुझे 'मैं निमित्त हूँ' ऐसा मानना है और आपको 'ज्ञानी से हुआ' ऐसा विनय रखना है! हर किसी की भाषा अलग होती है न!

अब, सत्पुरुष को गर्व नहीं होता, इसका क्या अर्थ है? वे खुद के हाथों, चाहे जितनी भी शांति दें, तब भी उन्हें ऐसा गर्व नहीं होता कि 'मैं दे रहा हूँ, मैं यह शांति दे रहा हूँ' ऐसा नहीं रहता। वह ऐसा जानते हैं कि 'मैं तो निमित्त हूँ और उसके घर की शांति उसे अनावृत करके दे रहा हूँ।'

ज्ञानी मोक्ष प्राप्ति के शुद्ध संयोगी

ज्ञानीपुरुष ही एक ऐसा संयोग हैं, मूल निमित्त है कि जो 'शुद्धात्मा' का उपादान करवाते हैं और अहंकार और ममता का, 'मैं' और 'मेरा' का अपादान करवाते हैं। दूसरे शब्दों में 'शुद्धात्मा' ग्रहण करवाते हैं और अहंकार और ममता का त्याग करवाते हैं। इसलिए उन्हें 'मूल निमित्त' और मोक्ष प्राप्ति के एकमात्र 'शुद्ध संयोगी' कहा गया है।

मोक्षदान मिल सकता है सहज ही

प्रश्नकर्ता : आत्म तत्व का चिंतवन तो मनुष्य को करना ही चाहिए न?

दादाश्री : हाँ, करना चाहिए। जब तक 'ज्ञानीपुरुष' उसे सचेतन नहीं बना देते, तब तक वह चिंतवन शुद्ध चिंतवन नहीं माना जाता, लेकिन शब्द से चिंतवन करता है। वह एक प्रकार का उपाय है। रास्ते में जाते हुए बीच का स्टेशन है वह।

प्रश्नकर्ता : आत्मा की आराधना किस तरह करनी चाहिए?

दादाश्री : 'ज्ञानीपुरुष' से माँग लेना कि मुझ से आत्मा की आराधना हो सके, ऐसा कर दीजिए, तो 'ज्ञानीपुरुष' कर देंगे। 'ज्ञानीपुरुष' जो चाहें वह

कर सकते हैं। क्योंकि वे खुद किसी भी चीज़ के कर्ता नहीं होते। भगवान भी जिनके वश में रहते हैं, वे 'ज्ञानीपुरुष' क्या नहीं कर सकते? फिर भी खुद संपूर्ण निर्‌अहंकारी पद में होते हैं, निमित्त पद में ही होते हैं।

प्रश्नकर्ता : आत्मा जानने की कुछ चाबियाँ तो होंगी न?

दादाश्री : चाबी-वाबी कुछ भी नहीं होतीं! ज्ञानी के पास जाकर कह देना कि, 'साहब! मैं बेअक्कल, बिल्कुल मूर्ख हूँ! अनंत जन्मों से भटका, लेकिन आत्मा का एक अंश भी, बाल जितना आत्मा भी मैंने जाना नहीं! इसलिए आप कुछ कृपा करें और मेरा इतना काम कर दीजिए!' बस इतना ही करना है। 'ज्ञानीपुरुष' तो मोक्ष का दान देने के लिए ही आए हैं।

प्रश्नकर्ता : माँगने से मोक्ष मिल जाता है?

दादाश्री : माँगने से सबकुछ मिल जाता है। लेकिन अगर मोक्ष दाता हों तो। मोक्षदाता होने चाहिए। वे खुद मोक्ष में रहते हों, तो। बाकी बाहर कहीं मोक्ष की बात नहीं करनी चाहिए। वहाँ धर्म की बात करनी चाहिए, वे आपको सही धर्म के मार्ग पर चढ़ा देंगे।

प्रश्नकर्ता : मोक्षदाता कहाँ से ढूँढें?

दादाश्री : 'ये' सिर्फ यहीं हैं। जब आना चाहो तब आ जाना। वर्ना आपके दोस्त को मोक्ष मिले उसके बाद आना। उसे अच्छा लगे तो उससे पूछकर आना।

ज्ञानीपुरुष सदा ही निरिच्छक

प्रश्नकर्ता : ऐसा कैसे पता चल सकता है कि मोक्ष हो गया?

दादाश्री : मोक्ष हो गया, इसका पता कब चलेगा कि जब इस दुनिया की किसी चीज़ की इच्छा नहीं रहे। ऐसी कोई चीज़ नहीं है कि जिसकी इच्छा हो, या फिर उसका संकल्प या उसका विकल्प हो। यानी कि खुद जानने लगे कि खुद निर्विकल्पी, निरिच्छक हो गया, तब मुक्त ही कहलाता है। जब तक कुछ भी इच्छा है तब तक भिखारी है, इच्छावान, भिखारी कहलाता है। जिन्हें सर्वस्व प्रकार की भीख खत्म हो जाएँ, उन्हें 'ज्ञानी' का पद मिलता है!

इस काल के सिर्फ हम ही तरणतारण हैं। ग़ज़ब का ज्ञानावतार है! घंटेभर में मोक्ष दे दें, ऐसे हैं। तुझे कुछ भी नहीं करना है, कुछ भी नहीं देना है। जो लक्ष्मी जी के भिखारी नहीं हों, ऐसे कुछ साधु मिलेंगे, विषयों के भिखारी नहीं हों, ऐसे भी मिलेंगे, लेकिन फिर वे मान के भिखारी होंगे या कीर्ति के भिखारी होंगे, या शिष्यों के भिखारी होंगे! किसी न किसी कोने में भिखारीपन पड़ा ही रहता है। जहाँ संपूर्ण अयाचकता प्राप्त होती है, वहीं परमात्म स्वरूप प्रकट होता है। हम लक्ष्मी के, विषय के, शिष्य के, या कीर्ति के, उनमें से किसी चीज़ के भिखारी नहीं हैं। हम किसी चीज़ के भिखारी नहीं हैं। हमें कुछ नहीं चाहिए। हाँ, तुझे हमारे पास से जो चाहिए, वह ले जा। लेकिन ज़रा सीधा माँगना, ताकि फिर से नहीं माँगना पड़े।

बिना मार्गदर्शक के रास्ता कैसे मिलेगा?

संसार के भौतिक सुख तो बाइ-प्रोडक्ट हैं और आत्मा प्राप्त करना, वह मेन प्रोडक्शन है। मेन प्रोडक्शन का कारखाना छोड़कर लोगों ने बाइ-प्रोडक्ट के लिए कारखाने लगाए हैं। तो कब पार आएगा। मोक्षमार्ग नहीं जानने के कारण सारा संसार भटकता रहता है और जहाँ जाए, वहाँ खो जाता है। यदि मोक्ष चाहिए तो आखिरकार ज्ञानी के पास ही जाना होगा। अरे! दादर स्टेशन पहुँचना हो, तो भी तुझे उस रास्ते के ज्ञानी से पूछना पड़ेगा। तब फिर यह मोक्ष की गली तो पतली,

अटपटी और भूल-भुलैयावाली है। खुद पार करने गया, तो कहीं का कहीं भटक जाएगा! इसलिए ज्ञानी को खोज निकाल और उनके पीछे-पीछे, उनके पद चिन्हों पर चला जा। हम मोक्षदाता हैं। वे मोक्ष देने के लाइसेन्स सहित हैं। अंत तक का दे सकें, ऐसे हैं। यह तो अक्रम ज्ञानावतार है! एक घंटे में हम तुझे भगवान पद दे सकते हैं! लेकिन तेरी पूर्ण तैयारी चाहिए।

कृपा से ही हो सकते हैं आत्मा में जागृत

प्रश्नकर्ता : 'मैं आत्मा हूँ' उसकी अनुभूति किस तरह से कर सकता है?

दादाश्री : वह अनुभूति करवाने के लिए ही तो 'हम' बैठे हैं। यहाँ पर जब हम 'ज्ञान' देते हैं, तब 'आत्मा' और 'अनात्मा' दोनों को जुदा (अलग) कर देते हैं।

आत्मा, शब्द से समझा जा सके वैसा नहीं है, संज्ञा से समझा जा सकता है। 'ज्ञानीपुरुष' आपका आत्मा संज्ञा से जागृत कर देते हैं। जैसे कि यदि दो गूंगे लोग हों, तो उनकी भाषा अलग ही होती है, एक ऐसे हाथ करता है और दूसरा ऐसे हाथ करता है, तो दोनों स्टेशन पर पहुँच जाते हैं! वे दोनों अपनी संज्ञा से समझ जाते हैं। हमें उसमें पता नहीं चल सकता। उसी तरह 'ज्ञानी' की संज्ञा को ज्ञानी ही समझ सकते हैं। वह तो जब 'ज्ञानी' कृपा बरसाएँ और संज्ञा से समझाएँ, तभी आपका आत्मा जागृत हो सकता है। आत्मा शब्द-स्वरूप नहीं है, स्वभाव-स्वरूप है। अनंत भेद से आत्मा है, अनंत गुणधाम है, अनंत ज्ञानवाला है, अनंत दर्शनवाला है, अनंत सुख का धाम है और अनंत प्रदेशी है। लेकिन अभी आपमें यह सब आवृत है। 'ज्ञानीपुरुष' आवरण तोड़ देते हैं। उनके एक-एक शब्द में ऐसा वचनबल होता है कि सभी आवरण तोड़ देते हैं। उनका एक-एक शब्द पूरे शास्त्र बना दे!

प्रश्नकर्ता : आत्मा में अनंत शक्तियाँ हैं क्या?

दादाश्री : हाँ, लेकिन वे शक्तियाँ 'ज्ञानीपुरुष' के माध्यम से प्रकट होनी चाहिए। जैसे कि जब आप स्कूल में गए थे, तब वहाँ पर सिखाया था न? आपका ज्ञान तो था ही आपके अंदर, लेकिन वे प्रकट कर देते हैं। उसी प्रकार 'ज्ञानीपुरुष' के पास आपकी खुद की शक्तियाँ प्रकट हो सकती हैं। अनंत शक्तियाँ हैं, लेकिन वे शक्तियाँ ऐसी की ऐसी 'अन्डर माइन' (गुप्त) पड़ी हैं। वे शक्तियाँ हम खुली कर देते हैं। वे सिर्फ आपमें में नहीं हैं, जीवमात्र में ऐसी शक्तियाँ हैं, लेकिन क्या करें? यह तो लेयर्स पर लेयर्स (आवरण) डाले हुए हैं सारे!

'ज्ञानीपुरुष' सभी शक्तियाँ देने को तैयार है। शक्ति आपके अंदर ही पड़ी हुई है, लेकिन आपको ताला खोलकर लेने का हक नहीं है। ज्ञानीपुरुष खोल देंगे, तब वे निकलेंगी। इस हिन्दुस्तान का एक ही मनुष्य पूरे वर्ल्ड का कल्याण कर सकता है, उसमें इतनी सारी शक्तियाँ हैं, लेकिन ये शक्तियाँ अभी उल्टे रास्ते पर जा रही हैं। इसलिए 'सबोटेज' (नुकसान) हो रहा है। इसको 'कंट्रोलर' की आवश्यकता है। 'ज्ञानीपुरुष', 'सत्पुरुष' और 'संतपुरुष' इसके निमित्त होते हैं।

गो टू ज्ञानी

भगवान किसी को बाँधने नहीं आते। अज्ञान से बंधा हुआ है और ज्ञान से छूटता है। एक बार छूट गया तो वापस नहीं बंधता। अज्ञान निकालने के लिए क्या करना चाहिए? ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। ज्ञान प्राप्ति करने के लिए पुस्तकों या शास्त्रों के साधनों का उपयोग करना चाहिए और अगर 'ज्ञानीपुरुष' मिल जाएँ तो अन्य किसी साधन की ज़रूरत नहीं है। इसे पुस्तकों में उतारा जा सके ऐसा नहीं है। चार वेद पूरे पढ़ने के बाद, धारण हो जाएँ तब अंत में वेद 'इटसेल्फ' क्या कहते हैं?

दिस इज़ नॉट देट, दिस इज़ नॉट देट (नेति, नेति) तू जिस आत्मा को ढूँढ रहा है, वह इनमें नहीं है? वह अवर्णनीय है, अवक्तव्य है, वह शब्दों में नहीं समा सकता। और वेद शब्दरूप हैं। इसलिए 'गो टू ज्ञानी' (ज्ञानी के पास जा) कि जहाँ पर आत्मा हाथ में आ सकता है। 'दिस इज़ देट' (यही वह है) कहेंगे वे।

फिर भी वेद का मार्गदर्शन तो एक साधन है। यह साध्य वस्तु नहीं है। अगर 'ज्ञानीपुरुष' नहीं मिलेंगे तो कभी भी काम नहीं होगा। अगर तुझे आत्मा जानना है तो 'ज्ञानीपुरुष' के पास जा।

सिर्फ आत्मा जानना है, समझना है और उसमें स्थिर होना है। 'आत्मा ऐसा है, वैसा है, ऐसा नहीं है,' वह तो सब शास्त्र भी कहते हैं, साधु महाराज भी कहते हैं। 'शक्कर मीठी है' ऐसा सब लोग कहते हैं, लेकिन मीठा का अर्थ क्या है? 'ज्ञानीपुरुष' मीठा का अर्थ क्या है, ऐसा दिखा देते हैं। उस ज्ञान को तो सिर्फ 'ज्ञानी' ही चखा सकते हैं, फिर वह ज्ञान क्रियाकारी हो जाता है।

आत्मा जान सकते हैं ज्ञानी के ज्ञान द्वारा

लोगों का माना हुआ, बुद्धि में समा सके, आत्मा ऐसा नहीं है। उसे नापा नहीं जा सकता। वहाँ 'मेज़र' (नाप) नहीं है, तोल नहीं है, कुछ भी चले ऐसा नहीं है! 'ज्ञानी' के 'ज्ञान द्वारा' ही आत्मा जाना जा सकता है।

शास्त्र ज्ञान अचेतन है, फिर भी चेतन की ओर ले जाता है और 'ज्ञानी' का ज्ञान चेतन है। 'ज्ञानी' का ज्ञान प्राप्त हो जाए तो फिर वह ज्ञान ही काम करता रहता है।

मुक्ति शास्त्रों के ज्ञान से नहीं है, मुक्ति 'ज्ञानी' के ज्ञान से है। जिसे मोक्ष में जाना है, उसे क्रियाओं की ज़रूरत नहीं है। जिसे देवगति में जाना हो, भौतिक सुखों की कामना हो, उसे क्रियाओं की ज़रूरत है। मोक्ष में जाना हो, उसे तो ज्ञान और ज्ञानी की आज्ञा, इन दोनों की ही ज़रूरत है।

यह जगत् अज्ञान का ही प्रदान है। संसार ने दृढ़ अज्ञान का प्रदान किया है। जब 'ज्ञानी' अवतरित होते हैं, तब 'ज्ञान' का प्रदान करते हैं। संसार का मूल कारण ही अज्ञान का प्रदान है।

'ज्ञानी' के बिना ज्ञान कहाँ से लाओगे? यह तो अज्ञान का ज्ञान लिया है। अब 'ज्ञान' का 'ज्ञान' लो।

पुद्गल और आत्मा को अलग कर दें, वे ज्ञानी

अज्ञान भी निमित्त से मिलता है और ज्ञान भी निमित्त से मिलता है। 'ज्ञानीपुरुष' के निमित्त से ज्ञान प्राप्त होता है। हमने 'ज्ञान' में जैसी है वैसी हकीकत देखी है, वही बता रहे हैं। बाकी तो कोई बाप भी नहीं बाँधता, अज्ञान बाँधता है और ज्ञान छुड़वाएगा। अज्ञान का बंधन करवानेवाले तो जगह-जगह पर हैं। लेकिन छुड़वानेवाला ज्ञान तो, 'ज्ञानीपुरुष' मिल जाएँ तभी मिलेगा!

जब जन्म लिया तब 'तू चंदूलाल है, ये तेरी माँ, ये तेरे पिता' ऐसा सब अज्ञान उसे निमित्तों से मिला। लोग ऐसे अज्ञान के लिए निमित्त बने। जबकि 'ज्ञानीपुरुष' तो शुद्धात्मा बना देते हैं और कहते है, 'तू शुद्धात्मा है, अकर्ता है।' ज्ञान प्राप्त होने के बाद खुद मुक्त होता जाता है।

'ज्ञानीपुरुष' के बिना सेल्फ रियलाइज़ (खुद की पहचान) नहीं किया जा सकता। और 'ज्ञानीपुरुष' किसे कहते हैं? यह अज्ञान और यह ज्ञान, *पुद्गल* और आत्मा दोनों को जो अलग कर दें, वे भेदविज्ञानी होते हैं, उन्हें ज्ञानी कहते हैं। जिनमें दोनों को अलग कर देने की शक्ति हैं।

ज्ञान-अज्ञान, दोनों नैमित्तिक

प्रश्नकर्ता : ज्ञान दिया जा सकता है?

दादाश्री : हाँ, ज्ञान दिया जा सकता है और अज्ञान भी दिया जा सकता है। यह जगत् अज्ञान दे रहा है जबकि ज्ञानी ज्ञान दे रहे हैं। दोनों ही चीज़ें दी जा सके ऐसी हैं। इतना है कि ज्ञान और अज्ञान दोनों चीज़ें नैमित्तिक हैं।

मूल ज्ञान तो आपके अंदर भरा पड़ा है। हमारे निमित्त से प्रकट होता है। यानी नैमित्तिक है। मैं तो निमित्त मात्र हूँ। किसी भी बारे में हम किसी भी चीज़ के कर्ता हो ही नहीं सकते। कर्ता होंगे तो हमें भी कर्म बंधेगा। जो कर्ता बनता है, उसे कर्मबंधन होता है। क्योंकि अगर कर्ता बने तो उसका भोक्ता बनना ही पड़ता है। हम निमित्त भाव में ही रहते हैं। संपूर्ण जगत् के कल्याण के निमित्त हैं। ये सब तो जगत् कल्याण के लिए प्रकट हुआ है। हम इस काल में नकद् मोक्ष दे सकते हैं। यहीं पर मोक्ष बरतेगा।

सभी को भले ही मोक्षधर्म का ज्ञान प्राप्त नहीं हो सके, लेकिन धर्मध्यान तो इस काल में फुल स्टेज पर जा सके, ऐसा है। 'अक्रम मार्ग' से मोक्ष तो कुछ महा पुण्यशालियों को ही प्राप्त होता है, लेकिन बाकी सभी को, हम सब से उच्च धर्मध्यान दे सकते हैं। रौद्रध्यान और आर्तध्यान, वह अधर्मध्यान है। रौद्रध्यान और आर्तध्यान जाए, वह धर्मध्यान है, और शुक्लध्यान, वह आत्मध्यान है।

देहाध्यास की निवृति ही मोक्ष

मोक्षधर्म अर्थात् अज्ञान से निवृत्ति होना, वह। 'इस' मोक्षमार्ग में अज्ञान से निवृत्ति करवा देते हैं, इसलिए ज्ञान में हुई प्रवृत्ति! अज्ञान निवृत्त हो जाए तो विज्ञान उत्पन्न होता है। लेकिन 'ज्ञानी' के बिना किसी से अज्ञान निवृत्त नहीं होता, किसी का देहाध्यास नहीं छूटता है। देहाध्यास में रहकर देहाध्यास छोड़ना, ऐसा कैसे हो सकता है? तरण तारणहार हो चुके हों ऐसे 'ज्ञानी' के पास जाना। वर्ना देहाध्यास से देहाध्यास नहीं जा सकता।

ज्ञानीपुरुष के बिना देहाध्यास छूट ही नहीं सकता। ज्ञानीपुरुष वीतराग होते हैं, वे निरंतर स्वपरिणति में ही रहते हैं। देह में नहीं रहने के कारण, मन में ही रहने के कारण, बुद्धि में नहीं रहने के कारण, अहंकार में नहीं रहने के कारण सिर्फ ज्ञानीपुरुष ही देहाध्यास छुड़वा सकते हैं।

देहाध्यास की निवृत्ति, ही मोक्ष है। एक ही अंश ज्ञान की प्रवृत्ति हो जाए तो (अंततः) सर्वांश हो जाए। एक ही अंश 'साइन्स' हो जाए तो सर्वांश हो जाए। क्योंकि ज्ञान, वह 'साइन्स' है, अज्ञान, वह 'साइन्स' नहीं है। एक अंश विज्ञान कब उत्पन्न होता है? कि 'इस' रास्ते के जानकार हों, रास्ते के जानकार से पूछना पड़ता है, तब रास्ता मिलता है, वैसे ही 'इन' जानकार 'ज्ञानीपुरुष' से पूछें तो मार्ग की प्राप्ति होती है।

कर्मबंधन अहंकार से

बाकी मोक्ष की किसी को पड़ी ही नहीं है। सभी को यही चाहिए कि 'हमकु क्या, हम कौन?' ऐसा ही चाहिए। और अगर कोई सच्चा (सही) पुरुष होगा न, तो उसे यह मोक्ष का मार्ग मिले बगैर नहीं रहेगा। यह तो मनोवृत्ति में कहीं न कहीं चोर है, और मान-तान एवं 'हम' में पड़े हुए हैं, इसीलिए कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ।

'हम' अर्थात् अहंकार, और जब यह अहंकार खत्म होगा तब भगवान बनेंगे।

अचेतन में 'मैं हूँ' ऐसा माने तो वह अहंकार है। यदि चेतन में 'मैं हूँ', ऐसा माने, तो उसे अहंकार नहीं कहते। 'मैं हूँ' अर्थात् अस्तित्व तो है। अतः 'मैं हूँ', ऐसा कहने का अधिकार तो है, लेकिन 'मैं हूँ',

वह किस में हूँ? इसका आपको पता नहीं है। अचतेन में 'मैं' बोलने का अधिकार नहीं है। 'मैं क्या हूँ?' इसका भान नहीं है। यदि यह भान हो जाए, तो काम ही हो गया समझो न।

प्रश्नकर्ता : 'रोंग बिलीफ' किस तरह बैठ गई?

दादाश्री : खुद के स्वरूप का भान नहीं रहा इसलिए इन लोगों ने दूसरा भान बिठाया और वह ज्ञान फिट हो गया। इसलिए लोगों के कहने के अनुसार उसे श्रद्धा बैठ गई कि वास्तव में 'मैं चंदूभाई हूँ' और ये सारे लोग भी 'एक्सेप्ट' (स्वीकार) करते हैं। ऐसे करते-करते 'बिलीफ' किसी भी प्रकार से 'फ्रेक्चर' होती ही नहीं। आत्मा में कुछ भी बदलाव नहीं होता। आत्मा तो सौ प्रतिशत शुद्ध सोने जैसा ही रहता है। सोने में तांबे की मिलावट हो जाए, उससे सोना बिगड़ नहीं जाता!

प्रश्नकर्ता : अब अहंकार कम करने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

दादाश्री : जिनका अहंकार खत्म हो गया हो उनके पास जाना चाहिए और अहंकार बढ़ाना हो तो गुंडे लोगों के पास जाने से बहुत बढ़ जाएगा। जैसा संग वैसा रंग लग जाता है।

अहंकार ही कर्म बाँधता है और अहंकार को निकाल दें (खत्म कर दें) तो कर्मबंधन रुक जाएगा और हमारा संसार भी रुक जाएगा। लेकिन जिनके पास इगोइज़म (अहंकार) है उनके पास हमारा इगाइज़म कैसे निकलेगा? इसीलिए मेरे पास आओगे तो मैं आपका इगोइज़म निकाल दूँगा।

अहंकार मिटे निर्‌अहंकार से

प्रश्नकर्ता : ज्ञानी अहंकार कैसे तोड़ सकते हैं।

दादाश्री : ज्ञानी तो बहुत तरह से अहंकार तोड़ देते हैं। वे तो तेज़ी से तोड़ देते हैं। हम से मिले, हमारा परिचय हो तो दिनोंदिन अहंकार टूटता रहता है। इन सभी (महात्माओं) का एक ही घंटे में (अहंकार) निकाल दिया था।

प्रश्नकर्ता : यह अहंकार ज्ञान से मिट सकता है?

दादाश्री : अहंकार अर्थात् अज्ञानता! और ज्ञान अर्थात् निर्‌अहंकारिता। अत: ऐसा नहीं है कि ज्ञान से कोई अहंकार न मिट सके। ज्ञान ही निर्‌अहंकारकता और अज्ञान अर्थात् अहंकारता, ये दो ही स्टेशन हैं!

सेपरेट 'I' और 'MY' विद ज्ञानीज़ सेपरेटर

प्रश्नकर्ता : जीव और शिव का भेद मनुष्यदेह के अलावा और किसी देह में तोड़ा जा सकता है या नहीं?

दादाश्री : नहीं। और किसी देह में नहीं हो सकता।

प्रश्नकर्ता : सूक्ष्मदेह से तापस कर सकता है?

दादाश्री : तापस? यह जानने के लिए? नहीं। इस भेद को तोड़ने के लिए तापस का तो काम ही नहीं है, वह भी नहीं कर सकेगा।

प्रश्नकर्ता : इस भेद को तोड़ने के लिए सूक्ष्म क्रियाएँ होती हैं? इसे सूक्ष्म देह से जाना जा सकता है?

दादाश्री : ऐसा है, 'ज्ञानीपुरुष' खुद अधिक आगे का जानने के लिए सब कर सकते हैं। 'ज्ञानीपुरुष' में जीव-शिव का भेद जा चुका होता है, फिर भी उसके आगे का जानना हो तो दूसरे सूक्ष्म तरीकों से आगे का सबकुछ जान सकते हैं। बाकी, तापस तो कुछ भी नहीं जान सकता।

इसीलिए हम कहते हैं न, सेपरेट 'I' and 'My' विद ज्ञानीज़ सेपरेटर (मैं और मेरा को ज्ञानी के भेदज्ञान से अलग करो)। उस सेपरेटर को शास्त्रकार क्या कहते हैं? भेदज्ञान कहते हैं। बिना भेदज्ञान के आप कैसे अलग करेंगे? क्या-क्या चीज़ आपकी है और क्या-क्या आपकी नहीं है, इन दोनों का आपको भेदज्ञान नहीं है। भेदज्ञान यानी यह सब 'मेरा' है और 'मैं' अलग हूँ इनसे। इसलिए ज्ञानीपुरुष के पास, उनके सानिध्य में रहें तो भेदज्ञान प्राप्त हो जाए और फिर हमारा ('I' और 'My') सेपरेट (अलग) हो जाएगा।

'I' और 'My' का भेद करें तो बहुत आसान है न यह? मैंने यह तरीका बताया, इसके अनुसार अध्यात्म सरल है या कठिन है? वर्ना इस काल के जीवों का तो शास्त्र पढ़ते-पढ़ते दम निकल जाएगा।

प्रश्नकर्ता : आप जैसों की ज़रूरत होगी न, समझने के लिए तो ?

दादाश्री : हाँ, ज़रूरत होगी। लेकिन ज्ञानीपुरुष तो अधिक होते नहीं न! किसी काल में जब वे हों, तब हमें अपना काम *निकाल* (निपटारा) लेना है। ज्ञानीपुरुष का 'सेपरेटर' ले लेना एकाध घंटे के लिए, उसका भाड़ा-वाड़ा (किराया) नहीं होता! उससे सेपरेट कर लेना। तो 'I' अलग हो जाएगा वर्ना नहीं होता न! 'I' अलग होने पर सारा काम हो जाएगा। सभी शास्त्रों का सार इतना ही है।

आत्मा होना है तो 'मेरा'(माइ) सबकुछ समर्पित कर देना पड़ेगा। ज्ञानीपुरुष को 'My' सौंप दिया तो अकेला 'I' आपके पास रहेगा। 'I' विद 'My' (मैं के साथ मेरा) वही जीवात्मा कहलाता है। 'मैं हूँ और यह सब मेरा है' वह जीवात्म दशा और 'सिर्फ मैं ही हूँ और यह मेरा नहीं' वह परमात्म दशा। अर्थात् 'My' की वजह से मोक्ष नहीं होता। 'मैं कौन हूँ' का ज्ञान होने पर 'My' छूट जाता है। 'My' छूट गया तो सब छूट गया।

'My' इज़ रिलेटिव डिपार्टमेन्ट एन्ड 'I' इज़ रियल। 'I' इज़ परमानेन्ट। 'My' इज़ टेम्परेरी। ('मेरा,' रिलेटिव विभाग है और 'मैं' रियल है। 'मैं' शाश्वत है, 'मेरा' विनाशी है।) यानी इसमें आपको 'I' को ढूँढ निकालना है।

आत्मा-अनात्मा अलग हो जाते हैं ज्ञानी के माध्यम से....

प्रश्नकर्ता : संसारी ज़िम्मेदारियों से बंधे हुए मनुष्य आत्मा किस तरह प्राप्त कर सकते हैं?

दादाश्री : 'चंदूलाल' और 'आत्मा', दोनों बिल्कुल अलग ही हैं और अपने-अपने अलग गुणधर्म बताते हैं। यह यदि 'ज्ञानी' से समझ लिया जाए तो संसार की ज़िम्मेदारियाँ अच्छी तरह से निभाई जा सकेंगी और 'यह' भी हो सकेगा। ज्ञानी भी खाते-पीते, नहाते-धोते सबकुछ करते हैं। आपके जैसी ही क्रियाएँ करते हैं, लेकिन उन्हें ऐसा भान रहता है कि 'मैं नहीं कर रहा हूँ,' और अज्ञान दशा 'मैं कर रहा हूँ', ऐसा भान रहता है। अर्थात् सिर्फ भान में ही फर्क है।

ये जो चंदूभाई हैं न, वे चंदूभाई अलग हैं और आत्मा अलग है, अंदर दोनों अलग हो सकें, ऐसा है। दोनों के गुणधर्म अलग हैं। जैसे सोना और तांबा दोनों का मिश्रण बन गया हो, तो उन्हें वापस अलग करने हो तो कर सकते हैं या नहीं?

प्रश्नकर्ता : कर सकते हैं।

दादाश्री : इसी तरह इन्हें 'ज्ञानीपुरुष' अलग कर सकते हैं। 'ज्ञानीपुरुष' से आत्मा अनात्मा की लक्ष्मण रेखा समझ लेनी चाहिए। उनके स्पष्टीकरण

तीनों काल में सत्य होते हैं। लाखों सालों बाद भी वही 'प्रकाश' रहता है!

आत्मा-अनात्मा मिक्सचर के रूप में

आपके शरीर में आत्मा है, वह तो निश्चित है न?

प्रश्नकर्ता : हाँ जी।

दादाश्री : तो वह किस रूप में होगा? मिक्सचर (मिश्रण) या कम्पाउन्ड (संयुक्त)? ये आत्मा और अनात्मा मिक्सचर के रूप में होंगे या कम्पाउन्ड रूप में?

प्रश्नकर्ता : कम्पाउन्ड!

दादाश्री : यदि कम्पाउन्ड रूप में हों, तो तीसरा नया ही गुणधर्मवाला पदार्थ उत्पन्न हो जाएगा, और आत्मा व अनात्मा उनके खुद के गुणधर्म ही खो देंगे, तब तो कोई आत्मा अपने मूलधर्म में आ ही नहीं सकेगा, और कभी भी मुक्त नहीं हो सकेगा। देखो मैं तुम्हें समझाता हूँ। यह आत्मा जो है, वह मिक्सचर के रूप में रहा है और आत्मा व अनात्मा दोनों ही अपने-अपने गुणधर्म समेत रहे हुए हैं। उन्हें अलग किया जा सकता है।

अगर कम्पाउन्ड हो गया होता तो पता ही नहीं चलता। चेतन के गुणधर्मों का भी पता नहीं चलता और अचेतन के गुणधर्मों का भी पता नहीं चलता और तीसरा ही गुणधर्म उत्पन्न हो जाता। लेकिन ऐसा नहीं है, वह तो सिर्फ मिक्सचर ही है। इसलिए अगर ज्ञानीपुरुष जुदा कर दें तो आत्मा की पहचान हो जाए।

वह भेद विज्ञान तो ज्ञानी ही प्राप्त करवा सकते हैं।

दोनों द्रव्य निज-निज रूप में स्थित हो जाते हैं। *पुद्गल,* (जो पूरण और गलन होता है) *पुद्गल* के रूप में परिणमित होता रहता है और चेतन, चेतन के परिणाम की भजना करता रहता है। दोनों ही अपने-अपने स्वभाव को छोड़ते नहीं हैं, वह तो जब 'ज्ञानीपुरुष' उन्हें अलग कर दें, उसके बाद ही! जब तक अलग नहीं हो जाएँ, तब तक, अनंत काल तक भटकते रहेंगे, फिर भी कुछ ठिकाना नहीं पड़ेगा। यह भेदविज्ञान है। जगत् के तमाम शास्त्रों की तुलना में सब से बड़ा विज्ञान, यह भेदविज्ञान है। शास्त्रों में तो क्या कहा है कि यह करो और वह करो। ऐसे सभी क्रियाएँ, कर्मकांड लिखे हुए हैं। लेकिन भेदविज्ञान तो अलग ही चीज़ है। वह शास्त्रों में नहीं मिलता। वह तो 'ज्ञानीपुरुष' की कृपा से ही प्राप्त हो सके, ऐसा है। चोर की कृपा से चोर बन जाता है और 'ज्ञानी' की कृपा से ज्ञानी बन जाते हैं।

जैसे इस अँगूठी में सोना और तांबा दोनों मिले हुए हैं, उसे हम गाँव में ले जाकर किसी से कहें कि, 'भाई, अलग-अलग कर दीजिए न!' तो क्या कोई भी कर देगा? कौन कर पाएगा?

प्रश्नकर्ता : सुनार ही कर पाएगा।

दादाश्री : जिसका यह काम है, जो इसमें एक्सपर्ट (विशेषज्ञ) है, वह सोना और तांबा दोनों अलग कर देगा। सौ का सौ प्रतिशत सोना अलग कर देगा, क्योंकि वह दोनों के गुणधर्मों को जानता है कि सोने के गुणधर्म ऐसे हैं और तांबे के गुणधर्म ऐसे हैं। उसी प्रकार ज्ञानीपुरुष आत्मा के गुणधर्मों को जानते हैं और अनात्मा के गुणधर्मों को भी जानते हैं।

आत्मा, अनात्मा के गुणधर्मों को जो पूर्ण रूप से जानते हैं, और अनंत सिद्धिवाले सर्वज्ञ, ऐसे जो ज्ञानी हैं, वे उनका पृथक्करण करके, उन्हें अलग कर सकते हैं। हम संसार के सब से बड़े साइन्टिस्ट (विज्ञानी) हैं। आत्मा और अनात्मा के एक-एक परमाणु का पृथक्करण करके, दोनों को अलग करके,

एक ही घंटे में आपके हाथों में शुद्ध आत्मा दे देते हैं। ज्ञानी की प्रकट वाणी के अलावा बाहर जो 'आत्मा, आत्मा' बोला जाता है या पढ़ा जाता है, वह मिलावटी आत्मा है। शब्द ब्रह्म! हाँ, लेकिन शुद्ध नहीं।

अब, आत्मा को आत्मधर्म में लाने के लिए मोक्षदाता पुरुष की ज़रूरत पड़ेगी।

कृपालुदेव ने अपनी पूरी पुस्तक के सार में कहा है कि, 'और कुछ भी मत ढूँढ, मात्र एक सत्पुरुष को ढूँढकर उनके चरण कमल में सर्व भाव अर्पण करके बरतता जा। फिर यदि मोक्ष नहीं मिले, तो मेरे पास से ले लेना।' अर्थात् हमें यदि मोक्ष नहीं मिले तो वे 'ज्ञानीपुरुष' नहीं हैं।

रोंग बिलीफ टूटती है सम्यक्दर्शन से

प्रश्नकर्ता : आत्मा खुद के धर्म में आ गया, उसका प्रमाण क्या?

दादाश्री : यह सब 'मैं कर रहा हूँ' और यह 'मैं हूँ' ये जो रोंग बिलीफ पड़ी हुई हैं, वे चली जाती हैं। अभी तो आपको 'मैं चंदूभाई हूँ, इस स्त्री का पति हूँ, इस बच्चे का फादर हूँ, इसका मामा हूँ, मूँगफली का व्यापारी हूँ,' ऐसी कितनी सारी 'रोंग बिलीफ' आपको होंगी?

प्रश्नकर्ता : असंख्य।

दादाश्री : अब इतनी सारी 'रोंग बिलीफ' कब जाएँगी? आत्मा खुद के गुणधर्म में आ जाए तो ये सारी 'रोंग बिलीफ' चली जाएँगी। 'रोंग बिलीफ' खत्म हो जाएँगी और 'राइट बिलीफ' बैठ जाएगी। 'राइट बिलीफ' को सम्यक् दर्शन कहते हैं। 'ज्ञानीपुरुष' आत्मा को उसके धर्म में ला देते हैं, जबकि बाकी सब तो अपने-अपने धर्म में है ही। आत्मा अपने धर्म में आए तो बाकी सब छूट जाता है, संसार छूट जाता है।

जैसे कमल और पानी में कोई झगड़ा नहीं है, वैसे ही संसार और 'ज्ञान' के कोई झगड़ें नहीं हैं, दोनों अलग ही हैं, लेकिन सिर्फ 'बिलीफें' ही गलत हैं। जब 'ज्ञानीपुरुष' 'रोंग बिलीफ' 'फ्रेक्चर' कर देते हैं और 'राइट बिलीफ' बिठा देते हैं, तब 'आप' अपने स्वभाव में आ जाते हो। 'रोंग बिलीफ' निकल जाए और अहंकार फ्रेक्चर हो जाए तो 'आप' 'भगवान' बन जाते हो!

आत्मधर्म ही स्वधर्म

प्रश्नकर्ता : आत्मज्ञान किस तरह से मिलता है?

दादाश्री : आत्मज्ञानी से आत्मज्ञान मिलता है। 'प्रत्यक्ष' ज्ञानी मिल जाएँ, तो आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है।

'ज्ञानीपुरुष' जो आत्मज्ञान देते हैं, वह किस तरह से देते हैं? यह भ्रांतज्ञान और यह आत्मज्ञान, यह जड़ज्ञान और यह चेतनज्ञान, उन दोनों के बीच में 'लाइन ऑफ डिमार्केशन' (भेद रेखा) डाल देते हैं। इसलिए फिर वापस भूल होना संभव नहीं रहता। और आत्मा निरंतर *लक्ष* में रहा करता है, एक क्षण के लिए भी आत्मा की जागृति नहीं जाती।

अभी आप में भी आत्मा और अनात्मा दोनों के धर्म अलग ही हैं, लेकिन आपमें दोनों परिणाम एक साथ निकलते हैं, इसलिए आपको बेस्वाद लगता है। 'ज्ञानीपुरुष' में चेतन परिणाम अलग रहते हैं और अनात्म परिणाम अलग रहते हैं, दोनों धाराएँ अलग-अलग बहती हैं, इसलिए वे निरंतर परमानंद में रहते हैं।

ऐसा है, खाना-पीना, नहाना, उठना, सोना, जागना, ये सभी देह के धर्म हैं। और सभी लोग देह के धर्म में ही पड़े हैं। 'खुद' 'आत्मधर्म' में एक बार, एक सेकन्ड के लिए भी आया नहीं है। यदि एक सेकन्ड के लिए भी आत्मधर्म में आया

होता तो भगवान के पास से खिसकता ही नहीं। आत्मधर्म प्राप्त करने के बाद देहधर्म, मनोधर्म, बुद्धि के धर्म, अंत:करण के धर्म, किसी धर्म की ज़रूरत नहीं रहती। क्योंकि खुद का स्वधर्म प्राप्त हो गया!

प्रश्नकर्ता : तो स्वधर्म में आने के बाद क्या-क्या करने की ज़रूरत है?

दादाश्री : स्वधर्म में आने के बाद अन्य कुछ भी करने की ज़रूरत ही नहीं है। ये सभी महात्मा स्वधर्म में आ चुके हैं।

समकित प्राप्त हो सकता है ज्ञानी के माध्यम से

'मैं चंदूभाई हूँ' ऐसी जो गलत श्रद्धा बैठ गई है उसे कितना भी भूलना चाहें लेकिन क्या भूला जा सकता है? वह तो पद्धतिपूर्वक 'ज्ञानी' के आधार से उसका तार कट जाना चाहिए। श्रद्धा के सूक्ष्म तार जुड़े होते हैं। 'रोंग बिलीफ' टूटे और 'राइट बिलीफ' बैठे, तभी काम आ सकता है! 'राइट बिलीफ' को 'सम्यक्दर्शन' कहा है और 'रोंग बिलीफ' को 'मिथ्यात्व' कहा गया है।

'रोंग बिलीफें' 'ज्ञानीपुरुष' 'फ्रेक्चर' कर देते हैं और 'राइट बिलीफ' बिठा देते हैं। तब हमें समकित दृष्टि मिली कहलाती है।

समकित की प्राप्ति ज्ञानी कृपा से

भगवान ने कहा है, 'क्या करने से मोक्ष में जा सकते हैं?' समकित हो जाए तो जा सकते हैं अथवा 'ज्ञानीपुरुष' की कृपा हो जाए तो।

समकित की प्राप्ति के लिए सब से बड़ा साधन यानी 'ज्ञानीपुरुष' का मिलना। यह साधन मिल गया तो अन्य किसी भी साधन की ज़रूरत नहीं है।

संसार में रहने के बावजूद भी संसार स्पर्श न करे, उसे 'समकित' कहते हैं। वह तो 'ज्ञानीपुरुष' की कृपा से प्राप्त होता है। 'ज्ञानीपुरुष' के अंदर भगवान प्रकट हो चुके होते हैं!

अपने आप 'मैं कौन हूँ' ऐसा समझ में नहीं आ सकता। अगर अहंकार निकल जाए तो 'मैं कौन हूँ' समझ सकते हैं। इसीलिए अगर आप में अहंकार है और आपको 'मैं कौन हूँ' जानना हो तो ज्ञानीपुरुष के पास जाना पड़ेगा। 'ज्ञानीपुरुष,' अहंकार की उपस्थिति में 'मैं कौन हूँ' की पहचान करवा देते हैं। उसके बाद आपका हिसाब बैठ जाता है।

सिर्फ जानने की ही ज़रूरत, 'मैं कौन हूँ'

प्रश्नकर्ता : 'मैं कौन हूँ' यह जानने की जो बात है, वह इस संसार में रहते हुए कैसे संभव हो सकता है?

दादाश्री : तब कहाँ रहकर जाना जा सकता है उसे? संसार के अलावा और कोई जगह है जहाँ रहा जा सकता है? इस जगत् में सभी संसारी ही हैं और सभी संसार में रहते हैं। संसार दो तरह के हैं : त्यागी भी संसार है और गृहस्थ वह भी संसार है। त्यागी को 'त्याग कर रहा हूँ, त्याग कर रहा हूँ' ऐसा ज्ञान बरतता है। गृहस्थ को 'ग्रहण करूँ, ले लूँ, दे दूँ' ऐसा ज्ञान बरतता है। लेकिन यदि आत्मा जान लिया तो मोक्ष हो जाएगा। आत्मा कहाँ से जाना जा सकता है? 'ज्ञानीपुरुष' से।

'मैं कौन हूँ,' उसी को समझने का विज्ञान है यहाँ पर। और यह जितना भी हम आपसे पूछ रहे हैं, तो हम आपसे ऐसा नहीं कहते कि आप ऐसा करके लाओ। आपसे हो सके, ऐसा नहीं है। अत: हम आपसे क्या कहते हैं कि हम आपके लिए सब कर देंगे। इसलिए आपको वरीज़ (चिंता) नहीं करनी है। यह तो पहले समझ लेना है कि वास्तव में 'हम' क्या हैं और क्या जानने योग्य है? सही बात

क्या है? करेक्टनेस (सच) क्या है? वर्ल्ड (जगत्) क्या है? यह सब क्या है? परमात्मा क्या हैं?

परमात्मा हैं? परमात्मा हैं ही और वे आपके पास ही हैं। बाहर कहाँ ढूँढ रहे हो? लेकिन कोई यह दरवाज़ा खोल दे तो हम दर्शन कर पाएँगे न! यह दरवाज़ा इस तरह बंद हो गया है कि कभी भी खुद से खुल पाए, ऐसा है ही नहीं। वह तो जो खुद पार उतर चुके हैं, ऐसे तरणतारणहार ज्ञानीपुरुष का ही काम है। जो जगत् के 'ऑल व्यू पोइन्ट्स' (सभी दृष्टि बिंदुओं) को देख सकते हैं, वे तरणतारणहार होते हैं!

प्रश्नकर्ता : 'आत्मा' की पहचान कैसे होगी? 'कर्ता कौन है' यह कैसे पहचानेंगे?

दादाश्री : वह सब तो हम दिखा देते हैं न। हम दिव्यचक्षु देते हैं, सब देते हैं। फिर उसका अहंकार रहता नहीं है न! फिर दिव्यचक्षु से सभी में आत्मा देख सकते हैं और चर्मचक्षु से *पुद्गल* दिखाई देता है। दिव्यचक्षु से आत्मा देखता है। फिर गाय में, घोड़े में और गधे में भी आत्मा दिखेगा ही।

ज्ञानविधि क्या है?

प्रश्नकर्ता : आपकी ज्ञानविधि क्या है?

दादाश्री : ज्ञानविधि तो सेपरेशन (अलग करती है) *पुद्गल* (अनात्मा) और आत्मा का! शुद्ध चेतन और *पुद्गल,* दोनों का सेपरेशन।

प्रश्नकर्ता : यह सिद्धांत तो ठीक ही है लेकिन उसका तरीका क्या है?

दादाश्री : इसमें देना कुछ नहीं है, सिर्फ यहाँ बैठकर ज्यों का त्यों बोलने की ज़रूरत है 'मैं कौन हूँ' उसका भान, ज्ञान प्राप्ति का दो घंटों का ज्ञान-प्रयोग होता है। उसमें अड़तालीस मिनट आत्मा-अनात्मा का भेद करनेवाले भेदविज्ञान के वाक्य बुलवाए जाते हैं। जो सभी को बोलने होते हैं। उसके बाद एक घंटे में उदाहरण देकर पाँच आज्ञाएँ विस्तारपूर्वक समझाई जाती हैं, कि अब बाकी का जीवन कैसे व्यतीत किया जाए ताकि नए कर्म न बंधें और पुराने कर्म खत्म हो जाएँ, साथ ही 'मैं शुद्धात्मा हूँ' का *लक्ष* हमेशा रहा करे!

स्वपद की प्राप्ति परमविनय से

हमारे पास दो ही चीज़ें लेकर आना। एक 'मैं कुछ भी नहीं जानता और दूसरा 'परम विनय'। 'मैं कुछ जानता हूँ,' यह तो कैफ़ है और यदि यथार्थ जान लिया हो, तब वह तो प्रकाश कहलाता है और जहाँ प्रकाश हो वहाँ ठोकर नहीं लगती। जबकि यह तो जगह-जगह पर ठोकरें लगती हैं। उसे 'जान लिया' कैसे कहें? एक भी चिंता कम हुई? सही जाना होता, तो एक भी चिंता नहीं होनी चाहिए। यदि 'मैं कुछ जानता हूँ', ऐसा तेरा मानना है, तो फिर मैं तेरे अधूरे घड़े में क्या डालूँ? तेरा घड़ा खाली हो, तो मैं उसमें अमृत भर दूँ। फिर तू जहाँ जाना चाहे, वहाँ जाना। बाल-बच्चों का ब्याह करना, संसार चलाना, लेकिन मेरी आज्ञा में रहना।

चिंता छूटे ज्ञानी के पास आकर

प्रश्नकर्ता : चिंता क्यों नहीं छूटती? चिंता से मुक्त होने के लिए क्या करें?

दादाश्री : ऐसा इंसान मिलेगा ही नहीं जिसकी चिंता बंद हो चुकी हो। कृष्ण भगवान के भक्त की भी चिंता बंद नहीं होती न! और चिंता से सारा ज्ञान अंधा हो जाता है, फ्रेक्चर हो जाता है।

संसार में एक भी इंसान ऐसा नहीं होगा कि जिसे चिंता नहीं होती होगी। साधु-साध्वी सभी को कभी न कभी तो चिंता होती ही है। साधु को इन्कम

टैक्स नहीं होता, सेल्स टैक्स नहीं होता, न भाड़ा होता है, फिर भी कभी न कभी चिंता होती है। शिष्य के साथ झंझट हो तो भी चिंता हो जाती है। आत्मज्ञान के बगैर चिंता नहीं जा सकती।

प्रश्नकर्ता : लेकिन चिंता बंद करने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?

दादाश्री : वह तो 'ज्ञानीपुरुष' से आकर कृपा ले जाना। फिर चिंता बंद हो जाएगी और संसार चलता रहेगा।

ज्ञानाग्नि से पाप भस्मीभूत

प्रश्नकर्ता : वह प्रक्रिया क्या है जो कि एक घंटे में मनुष्य को चिंता मुक्त करवा सके? उसमें कोई चमत्कार है? कोई विधि है?

दादाश्री : कृष्ण भगवान ने कहा है कि ज्ञानीपुरुष ज्ञानाग्नि से सारे पापों को भस्मीभूत कर सकते हैं! उस ज्ञानाग्नि से हम पापों को भस्मीभूत कर देते हैं और फिर वह चिंता मुक्त हो जाता है। उन पापों का नाश होने पर आत्मा प्रकट होता है, नहीं तो किसी भी तरह से आत्मा प्रकट नहीं हो सकता। खुद पापों का नाश कैसे कर सकेगा? नया पुण्य ज़रूर बाँध सकता है, लेकिन पुराने पापों का नाश नहीं कर सकता। ज्ञानीपुरुष का ज्ञान ही पापों का नाश कर देता है।

बाकी, पुण्य और पाप, पाप और पुण्य, उनके अनुबंध में ही मनुष्य मात्र भटकता रहता है। उसे कभी भी उसमें से मुक्ति नहीं मिलती। बहुत पुण्य करे तो ज़्यादा से ज़्यादा देवगति मिलती है, लेकिन मोक्ष तो मिल ही नहीं पाता। मोक्ष तो ज्ञानीपुरुष मिलें, और आपके अनंतकाल के पापों को भस्मीभूत करके आपके हाथ में शुद्ध आत्मा दें तब होगा। तब तक चौरासी लाख योनियों में भटकते ही रहना है।

वहाँ तक काम निकाल लो

देह के साथ अंत:करण की भेंट रखकर यदि एक ही घंटा ज्ञानीपुरुष के साथ बैठे, तो संसार का मालिक बन सकता है। हम उस एक घंटे में तो आपके पापों को भस्मीभूत करके, आपके हाथों में दिव्यचक्षु दे देते हैं, शुद्धात्मा बना देते हैं। फिर आप जहाँ जाना चाहो, वहाँ जाओ न! यह ज्ञान तो ठेठ मोक्ष में पहुँचने तक साथ ही रहेगा। यहाँ हमारी हाज़िरी में अंत:करण की शुद्धि होती रहती है। उसमें अगर दु:ख हो रहे हों, तो वे बंद हो जाते हैं, तदुपरांत शुद्धि होती है। उस शुद्धि से तो सच्चा आनंद उत्पन्न होता है! हमेशा के लिए शांति हो जाती है!

कृष्ण भगवान ने अर्जुन को गीता का उपदेश देते समय जो दिव्यचक्षु पाँच मिनट के लिए दिए थे, वही दिव्यचक्षु हम आपको एक घंटे में ही परमानेन्ट (हमेशा के लिए) दे देते हैं, उससे आपको 'आत्मवत् सर्व भूतेषु' दिखता है। 'ज्ञानीपुरुष' आपके अनंतकाल के पापों का पोटला बनाकर भस्मीभूत कर देते हैं,' ऐसा कृष्ण भगवान ने कहा है। सिर्फ पाप जला देते हैं इतना ही नहीं, लेकिन साथ ही साथ उन्हें दिव्यचक्षु देते हैं और स्वरूप का *लक्ष* करवा देते हैं! इस अक्रम मार्ग के 'ज्ञानीपुरुष' 'न भूतो न भविष्यति' ऐसे प्रत्यक्ष हैं, वे हैं तब तक काम *निकाल* लो!

कर्मों को भुगतने में फर्क

प्रश्नकर्ता : कर्म का फल तो भोगना ही पड़ेगा न?

दादाश्री : हाँ। कर्म का नियम ही ऐसा है।

प्रश्नकर्ता : क्या 'ज्ञानी' उनमें से छुड़वा सकते हैं?

दादाश्री : 'ज्ञानीपुरुष' तो आपके कर्मों को भस्मीभूत कर देते हैं।

ज्ञानीपुरुष कर्मों का नाश कर सकते हैं। कर्म, वे भी कुछ ही प्रकार के कर्म, सभी प्रकार के नहीं। सिर्फ कुछ ही प्रकार के कर्मों का गोला बनाकर नाश कर सकते हैं। बस, इतना उनके पास है, और ज्ञान से नाश करते हैं, अन्य किसी चीज़ से नाश नहीं हो सकता। अज्ञान से किए गए कर्मों का ज्ञान से नाश होता है। बाकी अन्य किसी भी क्रिया में परिवर्तन नहीं होता।

जिस दिन यह 'ज्ञान' देते हैं उस दिन क्या होता है? ज्ञानाग्नि से उसके जो कर्म हैं, वे भस्मीभूत हो जाते हैं। दो प्रकार के कर्म भस्मीभूत हो जाते हैं और एक प्रकार के कर्म बाकी रहते हैं। जो कर्म भाप रूपी हैं, उनका नाश हो जाता है। और जो कर्म पानी रूपी हैं, उनका भी नाश हो जाता है लेकिन जो कर्म बर्फ रूपी हैं, उनका नाश नहीं होता है। बर्फ रूपी जो कर्म हैं, उन्हें भोगना ही पड़ता है। क्योंकि वे जमे हुए हैं। जो कर्म फल देने के लिए तैयार हो गया है, वह फिर छोड़ता नहीं। लेकिन पानी और भाप स्वरूप जो कर्म हैं, उन्हें ज्ञानाग्नि उड़ा देती है। इसलिए लोग ज्ञान पाते ही एकदम हल्के हो जाते हैं, उनकी जागृति एकदम बढ़ जाती है। क्योंकि जब तक कर्म भस्मीभूत नहीं होते, तब तक जागृति बढ़ ही नहीं सकती इंसान की! बर्फ रूपी कर्म तो हमें भोगने ही पड़ते हैं।

लेकिन स्वरूप ज्ञान देने के बाद उन कर्मों के *भोगवटे* (भुगतने) में फर्क पड़ जाता है। सूली का घाव सूई जैसा लगता है। 'ज्ञानीपुरुष' कारण स्वरूप में रहे हुए कर्मों का नाश कर देते हैं, परंतु आज जो कार्य स्वरूप के कर्म हैं, बर्फ रूप हो चुके हैं, उन्हें तो भुगतना ही पड़ेगा।

और फिर उन्हें भी सरल रीति से कैसे भोगें, उसके सब रास्ते हमने बताए हैं कि, ''भाई, यह 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो' बोलना, त्रिमंत्र बोलना, नौ कलमें बोलना।''

ज्ञानी की करुणा कैसी?

बहुत दु:ख आ पड़े, तब आपको कहना चाहिए कि जाओ 'दादा' के पास।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, इस तरह हमारा दु:ख आपको सौंपा जा सकता है?

दादाश्री : हाँ, हाँ। दादा को ही सबकुछ दे देना और कहना कि 'जा, दादा के पास। यहाँ क्या है?

प्रश्नकर्ता : सुख भी दे देना है?

दादाश्री : नहीं, सुख नहीं। सुख आपके पास रखना है। मुझे सुख का शौक नहीं है, इसलिए आपके पास रखना। आपसे दु:ख यदि सहन नहीं हो तो मेरे पास भेज़ देना। दो-पाँच बार दु:ख का अपमान करो कि 'इधर क्यों आया है? दादा को सब दे दिया है।' तब फिर वह खड़ा नहीं रहेगा। इस *पुद्गल* का गुण कैसा है कि अपमान हो तो खड़ा नहीं रहता।

जो 'दादा भगवान' हैं, वे अचिंत्य चिंतामणि हैं। मुश्किल में उनका चिंतन करो तो मुश्किलें सब चली जाती हैं। जैसा चिंतन वैसा फल देते हैं। फिर हमें किसलिए घबराने की ज़रूरत है?

प्रश्नकर्ता : 'ज्ञानीपुरुष' परमाणु बदल सकते हैं? या फिर उनकी उपस्थिति से वे बदल जाते हैं?

दादाश्री : दूध में दही डालने के बाद 'ज्ञानी' कुछ भी नहीं कर सकते। दही डालने से पहले कहें तो होगा, बाद में कुछ नहीं होगा। 'ज्ञानी' कर्म भस्मीभूत कर सकते हैं, सिर्फ वही एक उनकी सत्ता है। कुछ भागों के रंग बदल सकते हैं, वह हम कर देते हैं।

प्रश्नकर्ता : दूध में दही डाला, वह किसे कहा जाता है?

दादाश्री : जो जम गए हैं, बर्फ के रूप में हो चुके हैं, उन कर्मों को तो भोगना ही पड़ेगा। भाप और पानी के रूप में हों, उन्हें 'ज्ञानी' भस्मीभूत कर देते हैं। फिर भी खुद तो नैमित्तिक भाव में ही होते हैं, अकर्ता ही रहते हैं

'ज्ञानीपुरुष' पूरे जगत् में से निष्ठा, जगत् में भटकती वृत्तियों को उठाकर ब्रह्म में बिठा देते हैं। और (हमारा) काम हो जाता है! यह तो मुक्ति का धर्म है। 'हम' 'स्वरूप ज्ञान' दें तो निरंतर खुद का स्वरूप ही याद रहता है, नहीं तो किसी को खुद का स्वरूप याद ही नहीं रहे। लेकिन प्रकट 'ज्ञानीपुरुष,' वे दीपक जला दें तो साक्षात्कार हो जाता है।

शुद्ध चित्त की प्राप्ति, ज्ञानी के माध्यम से...

जब 'हम' ज्ञान देते हैं, तब चित्त शुद्ध कर देते हैं। अशुद्ध चित्त की शुद्धि करने के लिए संसार के सारे धर्म प्रयत्न में लगे हैं। जैसे साबुन से मैले कपड़ों को धोकर साफ किया जाता है, वैसे! लेकिन साबुन कपड़ों का मैल तो निकालेगा, लेकिन फिर अपना मैल छोड़ जाएगा। फिर साबुन का मैल निकालने के लिए टीनोपाल चाहिए। टीनोपाल साबुन का मैल निकाल देगा, लेकिन अपना मैल छोड़ जाता है! अंत तक मैल साफ करनेवाली चीज़ अपना मैल, साफ होनेवाली चीज़ पर छोड़ती ही जाएगी, ऐसा संसार के सभी रिलेटिव धर्मों में होता है। जहाँ अंत में शुद्ध किए जानेवाले चित्त के ऊपर भी आखिर में अशुद्धि, मैल रहता ही है। संपूर्ण शुद्ध तो वही कर सकता है जो स्वयं संपूर्ण शुद्ध, सर्वांग शुद्ध है। इसलिए ज्ञानीपुरुष ही ऐसा कर सकते हैं। इसलिए प्रत्येक शास्त्र अंत में कहता है कि 'तुझे आत्मा प्राप्त करना है, तो ज्ञानी के पास जा। वे ही शुद्ध आत्मा दे सकते हैं। हमारे पास तो मिलावटवाला आत्मा है, अशुद्ध आत्मा है, जिसकी कोई कीमत ही नहीं हैं।'

ज्ञानीपुरुष अशुद्ध चित्त को हाथ नहीं लगाते। सिर्फ खुद का शाश्वत सुख, अनंत सुख का जो कंद है, वह चखा देते हैं, ताकि निज घर मिलते ही शुद्ध चित्त, जो कि शुद्धात्मा है, प्राप्त हो जाता है और शुद्ध चित्त ज्यों-ज्यों शुद्ध और सिर्फ शुद्ध को ही देखता है, त्यों-त्यों अशुद्ध चित्तवृत्ति फीकी पड़ते-पड़ते, आखिर में सिर्फ शुद्ध चित्त ही शेष बचता है। फिर अशुद्ध चित्त के पर्याय बंद हो जाते हैं। फिर जो शेष बचता है, वह सिर्फ शुद्ध पर्याय।

कलियुग का आश्चर्य 'अक्रम विज्ञान'

इस कलियुग में, दूषमकाल में ग़ज़ब का आश्चर्यज्ञान प्रकट हुआ है। इस आश्चर्यकाल के हम अक्रम ज्ञानी हैं और ऐसा हमें खुद बोलना पड़ रहा है। क्योंकि हीरे को खुद की पहचान कराने, खुद को बोलना पड़े, ऐसा यह वर्तमान आश्चर्यजनक काल है!

यह साइन्स (विज्ञान) उचित समय पर अनावृत हुआ है! कुछ और ही प्रकार का विज्ञान है यह! नए शास्त्र लिखे जाएँ, ऐसी बातें हैं। वर्ना इतने शास्त्र, कब समझ पाएँगे? इससे तो एक ही घंटे में पूरा विज्ञान समझ लेते हैं।

'यह' धर्म नहीं है, 'साइन्स' है। यह तो 'रियल' धर्म है। यह हमेशा प्रकट नहीं रहता। यह तो चौदह लोक के नाथ हमारे भीतर प्रकट हुए हैं। यह देह है, वह तो बुलबुला है, यह कब फूट जाए कहा नहीं जा सकता। जब तक यह है तब तक आप अपना काम निकाल लो। वीतरागों में जैसा प्रकाश हुआ था, वैसा प्रकाश है। इन 'ज्ञानीपुरुष' के पास संपूर्ण समाधान हो जाए, वैसा है, इसलिए आपका काम *निकाल* लो। हम तो आपको इतना कह देते हैं।

- जय सच्चिदानंद

दादावाणी

भक्ति और ज्ञान

प्रश्नकर्ता : दादा, भक्ति और ज्ञान के बारे में समझाइए।

दादाश्री : भक्ति के कई अर्थ हैं, एक से लेकर सौ तक हैं। ९५ से १०० तक का हमें अर्थ करना है। यह 'हमारा' निदिध्यासन करना, वही भक्ति है। लोग कच्चे हैं इसलिए भक्ति पर ज़ोर दिया है, ऐसा शास्त्रकारों ने बताया है। सिर्फ ज्ञान हो तो लोग दुरुपयोग करेंगे, कमज़ोर पड़ जाएगा तो फिर बहुत मार पड़ेगी, इस हेतु से भक्ति पर अधिक ज़ोर दिया है। ज्ञान क्या है? ज्ञान ही आत्मा है और 'मैं शुद्धात्मा हूँ' वह अंतिम भक्ति है। 'ज्ञानी' का निदिध्यासन ही 'मैं शुद्धात्मा हूँ' रूपी अंतिम भक्ति है।

किसी के भी प्रभाव में न आएँ, ऐसी दुनिया को तुझे एक तरफ रखना आए, उसे समर्पण भाव कहते हैं। यानी कि जो 'ज्ञानीपुरुष' का हो, वही मेरा हो। खुद की नाव उनसे अलग होने ही नहीं दे, जुड़ी हुई ही रखे, अलग हो जाए तो उलट जाएगा न! इसलिए ज्ञानी के साथ ही खुद की नाव जोड़कर रखना।

ज्ञान 'ज्ञान-स्वभावी' कब कहलाता है? देह में जो आत्मा है वह 'आत्मा-स्वभावी' रहे तब। इसे यदि हम लोग भक्ति कहेंगे तो लोग उनकी भाषा में ले जाएँगे। उनकी स्थूल भाषा में नहीं ले जाएँ, इसलिए हम ज्ञान पर विशेष ज़ोर देते हैं। जागृति, वही ज्ञान है। 'मैं शुद्धात्मा हूँ' यदि ऐसा रहा करे तो वह भाव नहीं है, लेकिन वह लक्ष्य-स्वरूप है; और लक्ष्य मिले बिना 'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा रहेगा नहीं। 'शुद्धात्मा' का लक्ष्य बैठना वह तो बहुत बड़ी बात है! अति कठिन है! लक्ष्य मतलब जागृति और जागृति वही ज्ञान है, लेकिन वह अंतिम ज्ञान नहीं है। अंतिम ज्ञान तो आत्मा का स्वभाव ही है। केवलज्ञान स्वभावी आत्मा का लक्ष्य हो जाने के बाद उसकी जागृतिरूपी ज्ञान में रहना, वह सबसे ऊँची और अंतिम भक्ति है, लेकिन हम उसे भक्ति नहीं कहते, क्योंकि उसे वापस सब अपने-अपने स्थूल अर्थ में ले जाएँगे। 'ज्ञानीपुरुष' की कृपा प्राप्त कर लेने जैसी है, कृपाभक्ति की आवश्यकता है।

ज्ञानियों का 'प्रतिष्ठित आत्मा' भक्ति में है और ज्ञान, 'ज्ञान' में है। 'खुद' 'शुद्धात्मा' में रहते हैं और 'प्रतिष्ठित आत्मा' से उनके 'खुद' के 'शुद्धात्मा' की और इन 'दादा' की भक्ति करवाते हैं, वह उच्चतम अंतिम प्रकार की भक्ति है!

भगवान ने खुद कहा है कि, 'हम ज्ञानी के वश में हैं!' भक्त कहते हैं कि, 'भगवान हमारे वश में है।' तो वे कहते हैं, 'नहीं, हम तो ज्ञानियों के वश हो चुके हैं।' भगवान तो कहते हैं कि, 'तू भी भगवान है। तेरा भगवान पद सँभाल, लेकिन यदि तू नहीं सँभाले तो क्या हो सकता है?' पाँच करोड़ की एस्टेटवाला लड़का हो, लेकिन होटेल में कप-प्लेट धोने जाए और एस्टेट नहीं सँभाले, तो इसमें कोई क्या कर सकता है?! मनुष्य 'पूर्ण' हो सकता है! सिर्फ मनुष्य ही, अन्य कोई नहीं! देवगण भी नहीं!

जब तक आत्मा संपूर्ण प्राप्त नहीं हो जाता, तब तक ऐसा रहना चाहिए कि 'ज्ञानीपुरुष' ही मेरा आत्मा है और उनकी भक्ति खुद के ही आत्मा की भक्ति है! भक्ति का स्वभाव कैसा है? जिस रूप की भक्ति करता है, वैसा ही बन जाता है। 'ज्ञानीपुरुष' की भक्ति में सबसे उच्च कीर्तनभक्ति है। कीर्तनभक्ति कब उत्पन्न होती है? कभी भी अपकीर्ति का विचार नहीं आए, भले ही कितना ही उल्टा हो तो भी अच्छा ही दिखे। जबकि 'ज्ञानीपुरुष' में उल्टा कुछ है ही नहीं। कीर्तनभक्ति में तो नाम मात्र की भी मेहनत नहीं है! कीर्तनभक्ति से तो ग़ज़ब की शक्ति उत्पन्न होती है!

(परम पूज्य दादाश्री की वाणी में से संकलित)

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

10-17 सितम्बर : पर्युषण पर्व दौरान 'आप्तवाणी श्रेणी-13 पूर्वार्ध' का पारायण हुआ। पहले दिन आप्तवाणी-3 के बाकी के 13 पेज का वाचन हुआ। उसके बाद, ७ दिन आप्तवाणी श्रेणी-13 (पूर्वार्ध) के पहले प्रकरण 'प्रकृति' का वाचन और सत्संग हुआ। 'प्रकृति' के अद्‌भुत विज्ञान की विशेष समझ पाकर आनेवाले सभी महात्माओं को अनोखा आनंद और जागृति का अनुभव हुआ। 'प्रकृति' को जानने के लिए जैसे प्रपात के रूप में महात्माओं ने प्रश्न पूछे। पूज्यश्री द्वारा हिन्दी में आप्तवाणी श्रेणी-13 (पू) और आप्तवाणी श्रेणी-7 पारायण की डीवीडी का विमोचन हुआ। 10 हज़ार से ज़्यादा महात्माओं ने इस पारायण का लाभ उठाया। अंतिम दिन, पूज्यश्री ने ऐसा ज़ाहिर किया कि 'बड़ौदा त्रिमंदिर' का खात मुहूर्त अक्तूबर महिने में और अंजार त्रिमंदिर प्राणप्रतिष्ठा - 6 मार्च 2016 के दिन होंगी। 21 से 28 साल के अविवाहित युवकों के लिए Y+ ग्रुप बनाया गया।

18 सितम्बर : हर साल पूज्यश्री गुरुपूर्णिमा के समय अमरिका में होते हैं इसलिए गुरुपूर्णिमा के निमित्त से अड़ालज में पर्यूषण के बाद के दिन दर्शन रखे जाते हैं। इस साल 8000 महात्माओं ने शांति से चरणस्पर्श दर्शन का लाभ लेकर धन्यता का अनुभव किया। दर्शन के दौरान महात्माओं ने प्रार्थना की थी और भक्तिपद गाए।

25-28 सितम्बर : दिल्ही में इस बार नई जगह पर सत्संग रखा गया था, जहाँ बहुत सारे नए मुमुक्षु आए थे। जिन लोगों ने पिछले साल ज्ञान प्राप्त किया था, उन्होंने दादा के ज्ञान के हृदय स्पर्शी अनुभव कहे थे। व्यक्तिगत मार्गदर्शन मिल सके उस हेतु से दादा दरबार अयोजित हुआ, जिससे स्थानीय महात्माओं को बहुत आनंद हुआ। ज्ञानविधि दौरान 600 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। ज्ञानविधि के दूसरे दिन नए महात्माओं के लिए आप्तपुत्र द्वारा फॉलोअप सत्संग रखा गया।

29 सितम्बर-1 अक्तूबर : जलंधर में पूज्यश्री के स्वागत में महात्माओं ने आनंद में आकर पंजाबी सांस्कृतिक भांगड़ा नृत्य किया था। जलंधर में 2 साल पहले जब इसी हॉल में सत्संग-ज्ञानविधि रखी गई थी, तब हॉल सिर्फ आधा ही भरा हुआ था जबकि इस साल नए मुमुक्षु और महात्माओं से पूरा हॉल भर गया था। हिन्दी भाषी राज्यों में नए मुमुक्षुओं को दादा की पहचान करवाने में टी.वी का बहुत बड़ा योगदान रहा है। ज्ञानविधि के दौरान 300 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया और आप्तपुत्र द्वारा फॉलोअप सत्संग रखा गया।

3-4 अक्तूबर : अड़ालज त्रिमंदिर में सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम का आयोजन हुआ, जिसमें 1200 मुमुक्षुओंने आत्मज्ञान प्राप्त किया। मोबाइल और टी.वी के बढ़ते हुए उपयोग से होनेवाली मानसिक चंचलता और उसकी जोखिमदारी पर सुंदर सत्संग हुआ।

5 अक्तूबर : परम पूज्य दादाश्री की कर्मभूमि बड़ौदा, ऐसे शहर के पास वरणामा गाँव की सीमा में पूज्यश्री द्वारा त्रिमंदिर का खात मुहूर्त हुआ। जहाँ पर 4000 से भी ज़्यादा महात्मा-मुमुक्षु उपस्थित थे। बड़ौदा-मुंबई नेशनल हाइवे पर बननेवाले इस 'त्रिमंदिर' का निर्माण बहुत ही जल्दी हो, कई महात्माओं ने ऐसी भावना प्रकट की। इस त्रिमंदिर में अंदाजित 13 फूट ऊँचाई के विराट भगवंत विराजमान होंगे। पूज्यश्री ने ऐसी भावना व्यक्त की थी कि हर साल छोटे-बड़े गाँव-शहर में ऐसे निष्पक्षपाती त्रिमंदिर बने। जगत् के लोगों के अतंराय टूटे और दादा का ज्ञान मिले और सीमंधर स्वामी का शरण प्राप्त हो। पूज्यश्री ने यह त्रिमंदिर निर्विघ्न पूरा हो और आसपास के लोग दर्शन करने आए, प्रत्यक्ष भगवान की पहचान पाकर आत्मज्ञान पाएँ और उनके जीवन में व्याप्त दूषण दूर हो उसके लिए प्रार्थना-विधि करवाई। त्रिमंदिर के लिए ज़मीन अर्पण करनेवाले महात्माने अपना सुंदर अनुभव कहा था। इस त्रिमंदिर के खात मुहूर्त के अवसर पर 'कविराज' हाज़िर रहे थे और भक्ति करवाई थी।

7-11 अक्तूबर : सेफ्रोनी रिसॉर्ट, महसाणा में अविवाहित युवा भाईओं के लिए पाँच दिन की ब्रह्मचर्य शिविर आयोजित हुई। इस बार ब्रह्मचर्य पुस्तक के पारायण के साथ 'कहाँ-कहाँ कमान छटक जाती है' इस सब्जेक्ट पर सुंदर सत्संग हुआ। इसी विषय पर एक सेशन वर्कशोप भी करने में आया। शिविरार्थी भाईओं ने रोज़मर्रा के जीवन में छोटी-छोटी बातों मे कहाँ-कहाँ कमान छटक जाती है वे अनुभव कहे। आप्तपुत्रों द्वारा ग्रुप सत्संग, व्यक्तिगत मार्गदर्शन, नाटक, गरबा, आहार विज्ञान पर प्रेज़न्टेशन जैसे बहुत सारे कार्यक्रम हुए। शिविर दौरान 432 भाईओं का रजिस्ट्रेशन हुआ, जिसमें 56 युवकों ने पहली बार हिस्सा लिया था। साधक भाईओं ने पूज्यश्री के साथ मोर्निंग वॉक के दौरान सूर्य और सूर्य किरणों के आकार में खड़े होकर एरियल व्यू फोटो सेशन में हिस्सा लिया। अंतिम दिन में पूज्यश्री के व्यक्तिगत मार्गदर्शन से भाईओं ने धन्यता का अनुभव किया।

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

जालंधर **दिनांक : 5 दिसम्बर** **समय की जानकारी के लिए संपर्क :** 9814063043
स्थल : गीता मंदिर, मोडेल टाउन, जालंधर.

दिल्ली **दिनांक : 6 दिसम्बर** **समय :** सुबह 10-30 से 1-30 **संपर्क :** 9810098564
स्थल : लौरेल हाईस्कूल, अग्रसेन धर्मशाला के पास, फिरनी रोड, मधुबन चौक, पीतमपुरा मेट्रो स्टेशन के पास, पीतमपुरा.

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'आस्था'** पर सोम से शनि रात 10-20 से 10-40 (हिन्दी में)
- **'डीडी'-इन्डिया** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 तथा शाम 6-30 से 7 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-बिहार** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 तथा रविवार शाम 5-30 से 5 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-बिहार** सोम-बुध-गुरु शाम 4 से 4-30 तथा मंगलवार शाम 4-30 से 5 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-गिरनार** पर हर रोज़ सुबह 9 से 9-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत'** पर हर रोज़ सुबह 10 से 10-30, दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन'-सह्याद्रि** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)

USA
- **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST (गुजराती में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'दूरदर्शन-नेशनल' पर हर सोमवार से शुक्रवार सुबह 8-30 से 9 (समय-वार में परिवर्तन)**
- **'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश** पर सोम से शुक्र दोपहर 3-30 से 4 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश** पर हर रोज़ रात 9-30 से 10 (हिन्दी में)
- **'साधना'** पर हर रोज़ शाम 7 से 7-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन' गुजरात - गिरनार** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन' गिरनार** पर हर रोज़ रात 9 से 9-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत' चेनल** पर हर रोज़ रात 8-30 से 9 (गुजराती में)

USA
- **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह 11 से 11-30 EST
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 EST (हिन्दी में)

UK
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (गुजराती में)

Singapore
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 4-30 से 5 तथा सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)

Australia
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 तथा सुबह 10 से 10-30 (हिन्दी में)

New Zealand
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 9-30 से 10 तथा रात 12 से 12-30 (हिन्दी में)

USA-UK-Africa-Aus. **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज़ रात 9-30 से 10 (गुजराती में)

'दादावाणी' के सभी सदस्यों के लिए सूचना

हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में दादावाणी पत्रिका हर महिने 15वी तारीख को पोस्ट की जाती है। जिन महात्माओं को 'दादावाणी' पत्रिका विलंब से या तो अनियमित रूप से मिलती है, वे पूर्व प्राप्त पत्रिका के कवर पर अपना नाम, पता, पीनकोड आदि जाँच कर लें। यदि उसमें कोई भूल हो तो आपका ग्राहक नं, पूरा नाम-पता, पीनकोड के साथ लिखकर मोबाईल नं. **8155007500** पर SMS करें। आप अडालज त्रिमंदिर के पते पर पत्र से या dadavani@dadabhagwan.org इ-मेइल आइडी पर इ-मेइल से भी सूचित कर सकते हैं। जिससे आपकी यहाँ दर्ज की गई जानकारी में सुधार किया जा सके। यदि आपको दादावाणी का अंक न मिले तो उपर दिए गए कोई भी माध्यम से हमें सूचित करें। यदि अंक स्टोक में होगा तो आपको फिर से भेजा जाएगा।

परम पूज्य दादा भगवान का 108वाँ जन्मजयंती महोत्सव - पूणे शहर में

दि. **24 नवम्बर** (मंगल), शाम 5-30 बजे - **स्वागत समारोह**, शाम 7-20 से 8-30 - **सत्संग**

दि. **25 नवम्बर** (बुध), सुबह 8 से 1, शाम 4-30 से 7 - **जन्मजयंती के अवसर पर पूजन-दर्शन-भक्ति**

दि. **26 नवम्बर** (गुरु), सुबह 10 से 12-30 - **स्पेश्यल टोपिक,** शाम 6 से 8-30 - **सत्संग**

दि. **27 नवम्बर** (शुक्र), सुबह 10 से 12-30 - **सेवार्थी सत्संग** तथा शाम 6 से 8-30 - **सत्संग**

दि. **28 नवम्बर** (शनि), सुबह 10 से 12-30 - **सत्संग** तथा शाम 5 से 8-30 - **ज्ञानविधि**

दि. **29 नवम्बर** (रवि), सुबह 10 से 12-30 - **स्पेश्यल टोपिक,** शाम 6 से 8-30 - **सत्संग**

स्थल : मुलिक पेलेस ग्राउन्ड, कल्याणीनगर, द बिशोप स्कूल के सामने, पूणे. **संपर्क :** 7218473468

सूचना : 1) महोत्सव स्थल रेल्वे स्टेशन से 5 की.मी. के अंतर पर है. स्थल पर पहुँचने के लिए ओटो-रिक्षा का किराया 70-80 रु है।

2) इस कार्यक्रम में भाग लेने हेतु आपको रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है।

3) इस बार जन्मजयंती महोत्सव के दौरान समग्र सत्संग तथा ज्ञानविधि कार्यक्रम हिन्दी में होंगे।

4) **गद्दे की व्यवस्था नहीं हैं ।** ओढ़ने-बीछाने का चद्दर, एयर पीलो, बेटरी, जरूरी दवाईया साथ में लाएँ।

5) जिनके पास दादा भगवान परिवार का परमनन्ट आइ-कार्ड (पहचानपत्र) है, वे आई-कार्ड अवश्य साथ लेकर आएँ।

आवास संबंधी विशेष सूचना

सभी महात्माओं और सेवार्थियों का रजिस्ट्रेशन आवास स्थल पर ही होगा. इस लिए सभी महात्माओं को सीधे आवास स्थल पहुँचने की नम्र विनंती है. **आवास का पता :** कुमार सेरेब्रम और सैबेज आई.टी. कंपनी के पास वाला मैदान, गोल्ड एडलेब चोक के पास, कल्याणी नगर, पुणे. (आवास स्थल पुणे स्टेशन से 5.5 कि.मी. के अंतर पर है तथा महोत्सव स्थल से 1 कि.मी के अंतर पर है।)

महात्माओं के लिए खुश खबर !!!

दिनांक 11 नवम्बर, 2015 (दिवाली) से दादा भगवान परिवार (अडालज) द्वारा प्रकाशित हुई आप्तवाणी और ग्रंथों में जिस भाषा के लिए जब तक डोनेशन फंड उपलब्ध रहेगा, तब तक डिस्काउन्ट रेट पर मिलेगा।

आप्तवाणी श्रेणी 1 से 14 : रु. 20/- प्रति पुस्तक।

ग्रंथ (वाणी का सिद्धांत, पैसों का व्यवहार, माँ-बाप बच्चों का व्यवहार, पति-पत्नी का दिव्य व्यवहार, प्रतिक्रमण, समझ से प्राप्त ब्रह्मचर्य (पू, उ), आप्तसूत्र, रु. 50/- प्रति पुस्तक।

गुजरात राज्य और मुंबई सेन्टर के अलावा अन्य राज्यों के महात्मा आप्तवाणी तथा ग्रंथ विविध कार्यक्रमों के दौरान अडालज त्रिमंदिर के बुक स्टॉल पर से या पूना जन्मजयंती के समय बुक स्टॉल पर से प्राप्त कर सकेंगे।

विशेष नोंध : पूना जन्मजयंती में गुजराती आप्तवाणी या ग्रंथों के सेट लिमिटेड स्टॉक होने की वजह से गुजरात राज्य और मुंबई के महात्मा ये पुस्तकें अपने सेन्टर या त्रिमंदिर के बुक स्टॉल पर से प्राप्त कर सकेंगे।

'दादावाणी' के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA12345 #. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. ३ पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, इ-मेल आदि आवश्यक जानकारी दें।

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : (079) 39830100, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **गोधरा :** 9723707738, **मोरबी :** (02822)297097, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460,

अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद: (079) 27540408, **मुंबई:** 9323528901, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली:** 9810098564, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 9830006376

यु.के.: +44 330-111-DADA (3232), **यु.एस.ए.-केनेडा:** +1 877-505-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलिया:** +61 421127947

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

हैदराबाद

दि. **2 दिसम्बर** (बुध), शाम 6 से 9 - **सत्संग** तथा **3 दिसम्बर** (गुरु), शाम 5-30 से 9 - **ज्ञानविधि**
दि. **4 दिसम्बर** (शुक्र), शाम 6 से 9 - **आप्तपुत्र सत्संग**
स्थल : भारतीय विद्या भवन, 5/9/1105, बशीर बाग, किंग कोठी रोड. **संपर्क :** 9393052836

इन्दौर

दि. **5 व 7 दिसम्बर** (शनि-सोम), शाम 6 से 9 - **सत्संग** तथा **6 दिसम्बर** (रवि), शाम 4 से 7-30 - **ज्ञानविधि**
स्थल : बास्केट बोल कॉम्प्लेक्स, रेसकोर्स रोड, जंजीरवाला चार रस्ता, ओल्ड पलासिया. **संपर्क :** 9039936173
विशेष सूचना : इन्दौर सत्संग में जो व्यक्ति बाहर से आ रहे हैं और उन्हें रहने की सुविधा की आवश्यकता है, वे सीधे आवास स्थल - **खंडेलवाल धर्मशाला भवन, 33 मौलाना आजाद मार्ग, लोहार पट्टी** पर पहुँचे। ज्यादा जानकारी हेतु 9039936173 पर संपर्क करें।

पाटन

दि. **9 दिसम्बर** (बुध), रात 8 से 11 - **सत्संग** तथा **10 दिसम्बर** (गुरु), शाम 7-30 से 11 - **ज्ञानविधि**
दि. **11 दिसम्बर** (शुक्र), रात 8 से 11 - **आप्तपुत्र सत्संग**
स्थल : प्रगति मैदान, बलिया हनुमान मंदिर के पास, पाटन (गुजरात). **संपर्क :** 9408539775

अडालज त्रिमंदिर में आप्तवाणी-13 (पू.) (गुजराती) पर सत्संग पारायण (शिविर)

दि. **19 दिसम्बर** - **आप्तवाणी 14 भाग-5** (गुजराती) का विशेष विमोचन समारोह - शाम 4-30 बजे से
दि. **19 से 26 दिसम्बर** - सुबह 9-30 से 12-45 तथा शाम 4-30 से 7, रात 8-30 से 9-30 (सामायिक)
दि. **27 दिसम्बर** - सुबह 9-30 से 12 - **श्री सीमंधर स्वामी की छोटी प्रतिमाओं की प्राणप्रतिष्ठा**

सूचना : 1) इस कार्यक्रम में भाग लेने हेतु आपको अपने नजदिकी सत्संग सेन्टर पर और यदि आपके नजदिक में कोई सत्संग सेन्टर नहीं है, तो आपको अडालज त्रिमंदिर रजिस्ट्रेशन विभाग में फोन नं. 079-39830400 (सुबह 9 से 12 तथा 3 से 6 के दौरान) पर दि. 30 नवम्बर 2015 तक रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है।

2) हिन्दी भाषी महात्माओं के लिए रेडियो सेट के द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। आनेवाले महात्मा अपने साथ खुद का एफएम रेडियो और हेडफोन लेकर आए।

3) ओढ़ने-बीछाने का चद्दर, एयर पीलो, बेटरी, जरूरी दवाईया साथ में लाएँ।

4) जिनके पास दादा भगवान परिवार का परमनन्ट आइ-कार्ड (पहचानपत्र) है, वे आई-कार्ड अवश्य साथ लेकर आएँ।

नडियाद

दि. **5 जनवरी** (मंगल), शाम 7-30 से 10-30 - **सत्संग** तथा **6 जनवरी** (बुध), शाम 7 से 10-30 - **ज्ञानविधि**
दि. **7 जनवरी** (गुरु), शाम 7-30 से 10-30 - **आप्तपुत्र सत्संग**
स्थल : बासुदीवाला स्कूल ग्राउन्ड, चेतक पेट्रोल पंप के पास, नडियाद (गुजरात). **संपर्क :** 9408528520

वडोदरा

दि. **8-9 जनवरी** (शुक्र-शनि), शाम 7 से 10 - **सत्संग** तथा **10 जनवरी** (रवि), शाम 6-30 से 10 - **ज्ञानविधि**
दि. **11 जनवरी** (सोम), शाम 7 से 10 - **आप्तपुत्र सत्संग**
स्थल : रेवा पार्क गरबा ग्राउन्ड, कलादर्शन चार रस्ता के पास, वाघोडिया रोड, वडोदरा. **संपर्क :** 9924343335

नवम्बर 2015
वर्ष - 11 अंक - 1
अखंड क्रमांक - 121

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2015-2017
Valid up to 31-12-2017
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2015
Valid up to 31-12-2017
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

दिपावली और नूतन वर्ष (विक्रम संवत 2072) की हार्दिक शुभकामनाएँ...

नूतन वर्ष में, सूक्ष्म स्वरूपी दादा, आज सर्वत्र प्रकाशमान,
पूर्ण स्वरूपी, केवलज्ञान रूपी, ज़रूरी शक्तियाँ करते प्रदान!
चलो भक्ति करें, निज स्वरूपी, पूर्ण वीतराग परमात्मा की,
अनुभव करें परमानंद, जगकल्याणार्थ निमित्त बनकर सभी!

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.